ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

ज्येष्ठ-आषाढ़, संवत् नानकशाही 552

वर्ष 13 अंक 10 जून 2020

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ

संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर

सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब- 143006

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com

website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार	4
संपादकीय	5
भक्त कबीर जी की अंतर-धर्म सम्बंधी दृष्टि -डॉ. जसविंदर कौर	7
लासानी शहीद बाबा बंदा सिंघ बहादुर -स. सुरजीत सिंघ	16
पंजाबी लोकनायक : महाराजा रणजीत सिंघ -डॉ. गुरचरन सिंघ	20
जून, १९८४ ई. में गुरुद्वारों पर हुए फौजी हमले -सिमरजीत सिंघ	23
निकट से देखा : सिरदार कपूर सिंघ - स. जैतेग सिंघ अनंत	36
किसु भरवासै बिचरहि भवन -डॉ. परमजीत कौर	45
आओ बन्धु ! -श्री प्रशान्त अग्रवाल	48
ख़बरनामा	49

गुरबाणी विचार

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिंना पासि ॥
जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥
दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥
जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥
रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥
जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥
करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥
प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥
आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५ ॥ (पन्ना १३४)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में आषाढ़ महीने की शिखर गर्मी की ऋतु के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य-मात्र को सांसारिक इच्छाओं के अत्यधिक बुरे प्रभाव से बचकर जीवन रूपी रात्रि को न गवाने तथा सतिगुरु जी की रूहानी अगुआई को प्राप्त करते हुए परमात्मा का साक्षात्कार प्राप्त करने का अंतिम उद्देश्य पूरा करने की निर्मल प्रेरणा बख़्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि आषाढ़ का महीना भले ही अत्यंत गर्मी वाला है लेकिन यह गर्मी उन मनुष्यों को महसूस होती है जिनके पास परमात्मा का नाम नहीं है अथवा आषाढ़ महीने की कठोर उष्णता से परमात्मा के सदैव शीतल नाम की ओट में रहकर बचाव पूर्णतः संभव है। गुरु जी कथन करते हैं कि यह उसको गर्म लगता है जिसने सारे विश्व के सृजनहार को छोड़ दिया है और मनुष्य से ही आशा लगा रखी है। सदीवी सुख परमात्मा के नाम की ओट में ही है।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि प्रभु के बिना किसी अन्य का सहारा चाहने अथवा लेने में व्यर्थ का भटकाव तथा खराबी है। यह गले में यम की फांसी पड़ने तुल्य है। ऐसा मनुष्य मस्तख पर लिखे अनुसार ही फल पाता है अर्थात् सदैव सहम अथवा भय में रहता है। जीवन रूपी रात यूं ही चली जाती है और अंतिम समय मनुष्य को निराशा होती है।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जीवन के आषाढ़ महीने में जिनको साधु अथवा सतिगुरु से साक्षात्कार हो गया वे प्रभु-दरबार में मुक्त हैं। हे प्रभु मालिक! अपनी कृपा करना! मेरे मन में भी आपके दीदार की प्यास जग जाए! यही प्रार्थना है। हे प्रभु! मुझे सतिगुरु से ज्ञात हो जाए कि आपके बिना कोई भी अन्य मेरे साथ नहीं है। जिस मनुष्य के मन में प्रभु-चरणों का निवास है उसको ग्रीष्म ऋतु से जुड़ा आषाढ़ महीना भी सुखदायी लगता है।

संपादकीय

काश! आज 'पांडी पातशाह' का शासन होता

सिक्ख पंथ की शान, शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ को पंजाबी के नामवर कवि विधाता सिंघ तीर ने अपनी एक कविता में 'पांडी पातशाह' कह कर संबोधित किया है। कवि द्वारा प्रदत्त यह मुरातबा (ओहदा) महाराजा रणजीत सिंघ को बड़े-बड़े छत्रपति राजाओं से कहीं ऊँचा कर देता है। दुनिया में बड़े-बड़े छत्रपति राजा हुए हैं, परन्तु 'पांडी पातशाह' बनना अकाल पुरख की कृपा सदका केवल महाराजा रणजीत सिंघ के हिस्से ही आया है।

एक बार जब महाराजा रणजीत सिंघ के शासन-काल में अकाल पड़ गया तो महाराजा ने अपने सभी माल-खजानों के द्वार अपनी जनता के लिए खोल दिए। उस समय एक बुज़ुर्ग, जो अपने हिस्से का अनाज उठा कर ले जाने के योग्य नहीं था, महाराजा ने उसकी गठरी (पंजाबी भाषा में पंड) अपनी पीठ पर उठा ली और उस बुज़ुर्ग के पांडी (बोझ, गठरी उठाने वाला) बन अनाज उसके घर छोड़ कर आए। ऐसा 'पांडी पातशाह' बनना कोई आसान काम नहीं है। यह तो वही बन सकता है जिसने गुरु नानक पातशाह की कृपा से ग़रीबी-नम्रता को गुर्ज और सबकी चरण-धूल होने को खंडा बना लिया हो— *गरीबी गदा हमारी॥ खंना सगल रेनु छारी॥''*

समय- समय पर मानवता के लिए कुदरती आपदाएं— अकाल, भूचाल, बाढ़ और महामारी आदि घटित होती ही रहती हैं। यूं तो सब अकाल पुरख के हुक्म में ही घटित होता है। वर्तमान में कोरोना महामारी के कारण सारी दुनिया का संतुलन बिगड़ चुका है। इससे पहले भी विभिन्न समय पर भयानक महामारियों ने मानवता का बहुत भारी जानी-माली नुकसान किया है। बेशक ये महामारियां मानवता को बहुत पीड़ा पहुंचाती हैं, परन्तु परमात्मा की क्या रज़ा है, यह तो वो खुद ही जानता है। इसके विपरीत यदि जनता के अगुआ परोपकारी, न्यायकारी, हमदर्द हों और मानवतावादी सोच के धारक हों तो ऐसी महामारियों का सामना करना आसान हो जाता है। यदि अगुआ ख़ुदगर्ज़ और फिरकाप्रस्त हों तो जनता त्राहि-त्राहि कर उठती है। फिर उतना दुख किसी महामारी या महामारी से उत्पन्न संकट का नहीं होता जितना इस दुर्भावना का होता है जिसमें कुछ ख़ास वर्गों को अनावश्यक रूप से निशाना बनाया जाता है।

आज विश्व भर में लगभग २१३ देशों में ५० लाख के लगभग लोग कोरोना महामारी से पीड़ित हो चुके हैं, ३ लाख से ऊपर मौतें हो चुकी हैं। यदि भारत की बात करें तो देश भर में एक लाख के करीब लोग इस बीमारी से पीड़ित हो चुके हैं और तीन हज़ार के करीब मौतें हो चुकी हैं। विश्व भर में तालाबन्दी के कारण करोड़ों लोग बेरोज़गार हो चुके हैं। ऐसे कठिन समय में समर्थ मुल्कों की सरकारें अपने-अपने देश के बाशिंदों को हर प्रकार की सुविधायें मुहैया करवा रही हैं, बेरोज़गारों की पूरी मदद कर रही हैं, जबकि हमारे

देश में सांप्रदायिक सोच की धारक सरकार ऐसी आपदा के समय में भी धर्म की राजनीति खेल रही है। देश में लाखों लोग बेरोज़गार हो गए हैं, लाखों भुखमरी का शिकार हैं, लाखों बच्चे भूख के कारण सूखा रोग के शिकार हो गए हैं, घर-वापसी के लिए धूप में नंगे पांव बच्चों और बुज़ुर्गों को कंधों पर उठा कर हज़ारों किलोमीटर चलते-चलते मज़दूरों के पैरों की तलियां फट गई हैं। भारत में देवियों की पूजा की जाती है, परन्तु इसी भारत में आज गर्भवती माताएं अपनी कोख में बच्चों सहित सैकड़ों मील पैदल चलने, सड़कों पर बच्चों को जन्म देने और जन्म देकर फिर सैकड़ों मील पैदल चलने के लिए मजबूर और लाचार हैं। आज देश में सरकार द्वारा किये जाते अमीर-ग़रीब के भेदभाव को सारी दुनिया ने देखा है, जिससे दुनिया भर में देश की साख को बट्टा लगा है। और भी बहुत कुछ, जो सोचने-समझने की सीमा से बाहर है, गलत हो रहा है, जिसे देश का मीडिया दिखा नहीं रहा।

ऐसे हालात में फिर 'पांडी पातशाह' याद आता है, जिसके शासन में अमीरी- ग़रीबी, धर्म-जाति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता था; जिसके शासन में मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे सब सम्मान का पात्र थे; प्राकृतिक आपदा के समय जिसके खजाने के द्वार ज़रूरतमंदों के लिए खुल जाते थे; जो लाचार लोगों के घर तक अनाज पहुँचाने के लिए खुद सहायक बन जाता था; जिसका शासन देशवासियों के लिए 'बेगमपुरा' की विचारधारा वाला था, जिसके शासन में सब एक समान थे, कोई दूसरे, तीसरे दर्जे का नहीं था।

जहाँ इस 'पांडी पातशाह' ने शासन किया था, वहां आज भी कोई भूखा नहीं सोया। 'पांडी पातशाह' के वारिसों ने पंजाब सहित पूरे भारत और विदेशों में भी गुरु के लंगर के द्वार ज़रूरतमंदों के लिए खोल दिए, घर-घर जाकर ज़रूरतमन्दों की खबर ली।

दूसरी तरफ़ जहां जनता त्राहि-त्राहि कर रही है, वहीं ऐसे दल सत्ता पर काबिज़ हैं जिन्होंने कभी गद्दारी कर 'पांडी पातशाह' का शासन ख़त्म करवाया था। ऐसे में इनसे देश के भले की क्या उम्मीद हो सकती है? वास्तव में यदि गुज़र चुके आदर्श राजाओं के जीवन से प्रेरणा लेकर शासन-प्रबंध चलाया जाये तभी आदर्श शासन की स्थापना हो सकती है, परन्तु हुक्मरानों के मन में भरी सांप्रदायिक नफ़रत ऐसा होने नहीं देती। वर्तमान समय में चाहिए तो यह था कि देश की युवा पीढ़ी को महाराजा रणजीत सिंघ के जीवन एवं आदर्श शासन के बारे में बताया जाता, परन्तु यहां तो जुआ खेलने वालों और निजी पारिवारिक लड़ाई वालों, जिनका देश, धर्म और समाज में कोई रचनात्मक योगदान नहीं, बस, उनकी ही कथा- कहानियां सुनाई जा रही हैं। आज देश में गरीब जनता की दयनीय हालत देख कर 'पांडी पातशाह' का शासन याद आता है। काश! आज देश में गुरु साहिब के दिखाए मार्ग के अनुसार 'पांडी पातशाह' का सृजित मानवतावादी खालसा राज्य होता तो देश में किसी ग़रीब को ज़लालत भरी ज़िंदगी न जीनी पड़ती।

—सतविंदर सिंघ फूलपुर

फोन : 99144-19484

भक्त कबीर जी की अंतर-धर्म सम्बंधी दृष्टि

*-डॉ. जसविंदर कौर**

भक्त कबीर जी की गणना मध्यकालीन भक्तों में की जाती है। उन्होंने न केवल अपने समसामयिक युग को अपितु आधुनिक युग को भी प्रभावित किया है। उन्होंने भारतीय साहित्य और समाज को नूतन एवं मौलिक चिंतन प्रदान किया। भक्त कबीर जी के समय समाज धार्मिक संकीर्णता तथा असमानता वाले सामाजिक प्रबंध के दमनकारी प्रभाव से ओतप्रोत था। उस समय मुसलिम हाकिम बहुत कट्टर हो गये थे। यहां तक कि सिकंदर लोधी जैसे न्यायपसंद सुलतान के राज्य में भी बोधन ब्राह्मण को कत्ल किया गया था। बोधन भक्त कबीर जी का शिष्य था जिसका दोष मात्र इतना था कि उसने यह कहने का साहस किया था कि उसका अपना धर्म भी उतना ही सत्य है जितना इसलाम।

भक्त कबीर जी के शिष्य बोधन की अंतर-धर्म सम्बंधी दृष्टि के पीछे भक्त कबीर जी की अंतर-धर्म सम्बंधी समझ की प्रेरणा थी। भक्त कबीर जी की इस सम्बंधी समझ को समझने के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज उनकी बाणी को आधार बनाना होगा। भक्त कबीर जी की अन्य रचनाएं हमें बीजक, कबीर ग्रंथावली तथा कई अन्य स्रोतों से प्राप्त होती हैं परंतु इस लेख में सिर्फ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित उनकी बाणी तक ही अपने अध्ययन को सीमित रखा जायेगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान के अतिरिक्त १२वीं से १७वीं सदी के भक्तों तथा गुरु साहिबान के निकटवर्ती गुरसिक्खों के अलावा भट्टों की बाणी संग्रहित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उन्हीं महापुरुषों की बाणी को स्थान प्राप्त हुआ है जिनकी विचारधारा सिक्ख गुरु साहिबान की विचारधारा के साथ समानता रखती थी। पांचवें सिक्ख गुरु साहिब श्री गुरु अरजन देव जी ने इस महान ग्रंथ का संपादन करते समय जिन भक्तों की बाणी को इसमें स्थान दिया उनमें भक्त कबीर जी का प्रमुख स्थान है। भक्त साहिबान की बाणी के इस पावन ग्रंथ में सम्मिलित होने के कारण यह किसी क्षेत्र आदि का ग्रंथ न होकर विशाल भारत के प्रतिनिधि महापुरुषों का ग्रंथ बन गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ५०० वर्ष के महापुरषों की बाणी को संग्रहित किया गया है। इस प्रकार यह ग्रंथ देश-काल की सीमाओं से परे होकर एक अनमोल ग्रंथ बन गया है। इस ग्रंथ के बाणीकारों का चयन जाति, रंग, धर्म, देश, काल के आधार पर नहीं किया गया, इसलिए यह ग्रंथ धर्मनिरपेक्ष है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सिक्ख गुरु साहिबान के

**पूर्व प्रोफैसर एवं मुखी, गुरु नानक देव अध्ययन विभाग, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर-१४३००५, फोन : ९५०१०-५५४४५*

अतिरिक्त जिन महापुरुषों की बाणी संग्रहित है उनमें से भक्त कबीर जी की सबसे अधिक बाणी है। भक्त कबीर जी की बाणी को महत्त्वपूर्ण मानकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उनकी बाणी को सिक्ख गुरु साहिबान के पश्चात स्थान दिया गया है। भक्त कबीर जी अपनी बाणी के सम्बंध में कहते हैं :

लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥

(पन्ना ३३५)

भक्त कबीर जी की धर्म के प्रति दृष्टि को जानने के लिए उनके समय के युग की परिस्थितियों का बोध होना आवश्यक है। भक्त कबीर जी का युग हिंदू-मुसलमानों के सांस्कृतिक संघर्ष का युग था। धार्मिक मतभेदों ने लोगों को कई वर्गों में बांट दिया था। यह अंतर मात्र हिंदू-मुसलमानों में ही नहीं था, बल्कि एक ही जाति और धर्म के लोग भी कई संप्रदायों में बंटे हुए थे। समाज पूरी तरह विकृत हो चुका था। हिंदुओं में छुआछूत और उच्च वर्ग के व्यवहार ने सामाजिक असमानता को जन्म दिया। मुगल तलवार के ज़ोर पर अपने धर्म का प्रचार करना चाहते थे।

धर्म का कार्य आपस में जोड़ना है। कई बार धर्म के नाम पर मानव को मानवता से पृथक किया गया। धर्म के प्रचार और प्रसार के नाम पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अत्याचार किये जाते हैं। दूसरे शब्दों में, धर्म के नाम पर अधार्मिकता का प्रचलन किया जाता रहा है। भक्त कबीर जी जैसे विचारकों के अनुसार यह धर्म का वास्तविक स्वरूप नहीं है। भक्त कबीर जी ने अपनी बाणी में स्पष्ट रूप से प्रचलित धार्मिक आडंबरों को नकारा। उन्होंने कहा कि कई लोग बाहरी चिन्हों को ही जीवन का उचित मार्ग मान बैठे हैं, इसलिए दुनिया भ्रम-जाल में फंसी हुई है :

जोगी कहहि जोगु भल मीठा अवरु न दूजा भाई ॥
रुंडित मुंडित एकै सबदी
एइ कहहि सिधि पाई ॥१ ॥
हरि बिनु भरमि भुलाने अंधा ॥
जा पहि जाउ आपु छुटकावनि
ते बाधे बहु फंधा ॥१ ॥ रहाउ ॥
जह ते उपजी तही समानी इह बिधि बिसरी तब ही ॥
पंडित गुणी सूर हम दाते एहि कहहि बड हम ही ॥

(पन्ना ३३४)

जिन लोगों ने वेद-पुराण पढ़कर कर्मकांड की आशा रखी वे आशा पूरी हुए बिना ही संसार त्याग गये। कई लोगों ने जंगलों में जाकर योग-तप किए, कंद-मूल खाकर जीवन-निर्वाह किया। योगी, कर्मकांडी, अलख जगाने वाले मौनधारी यम के पाले पड़ गये। जिसने शरीर पर चक्र-चिन्ह तो लगा लिये, जों राग-रागिनी तो गाता रहा, पर मात्र पाखंड की मूर्ति बना रहा, ऐसा मनुष्य व्यर्थ में जीवन गंवाता है। यदि नग्न रहने से मुक्ति मिलती तो हर जानवर मुक्त होता, सिर मुंडाने से मुक्ति होती तो भेड़ मुक्त होती, बिंदु रखने से मुक्ति होती तो खुसरा मुक्त होता। वे हिंदू-मुसलमान दोनों की समान रूप से आलोचना करते हुए कहते हैं :

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥

(पन्ना ६५४)

हिंदू-मुसलमान दोनों इस बात को लेकर झगड़ते हैं कि दोनों में से सच्चा कौन है। भक्त कबीर जी के अनुसार दोनों ही प्रभु का वास्तविक स्वरूप समझने में असमर्थ हैं और व्यर्थ के कर्मकांडों एवं झगड़ों में फंसे हुए हैं। भक्त कबीर जी अपनी बाणी में बार-बार इस बात की चर्चा करते हैं कि हिंदू मूर्ति-पूजा, तीर्थ- स्नान, श्राद्ध, वेद-पाठ, जाति-अभिमान के चक्रव्यूह में उलझे हुए हैं।

मूर्ति-पूजा का खंडन बड़े तार्किक ढंग से करते हुए वे कहते हैं कि मूर्तिकार पत्थर घड़कर मूर्ति बनाता है और इस प्रक्रिया में वह पत्थर पर पांव रखकर खड़ा हो जाता है। अगर यह मूर्ति वास्तविक देवता है तो यह उस मूर्तिकार द्वारा अपना अपमान करने के कारण उसका नाश क्यों नहीं करती?

पाखान गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ ॥
जे एह मूरति साची है तउ गढ़णहारे खाउ ॥
(पन्ना ४७९)

मूर्ति को जो दाल, भात, लापसी, कासार अर्पित किया जाता है वह तो पुजारी ही खा जाता है, मूर्ति तो निर्जीव होने के कारण उसका भोग नहीं कर सकती :

भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु ॥
भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥
(पन्ना ४७९)

यदि मन में विकारों की मैल है तो तीर्थ-स्नान मुक्त नहीं कर सकता। यदि स्नान से ही मुक्ति मिलती होती तो सर्वप्रथम मेंढ़क को मुक्त होना चाहिये, क्योंकि वो सदा स्नान करता रहता है। नाम-विहीन मेंढ़क के समान लोग आवागमन के चक्र में पड़े रहते हैं :

जल के मजनि जे गति होवै
नित नित मेंडुक नावहि ॥
जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर
फिरि फिरि जोनी आवहि ॥ *(पन्ना ४८४)*

भक्त कबीर जी (तत्कालीन परंपरा पर कुठाराघात करते हुए) कहते हैं कि कठोर मन का व्यक्ति यदि काशी में भी शरीर त्यागेगा तो उसे मुक्ति नहीं मिलेगी और प्रभु-भक्त मगहर में प्राण त्यागने पर स्वयं भी पार उतर जाता है तथा अपने कुटुंब को भी भवसागर से पार करा देता है। प्रभु किसी समय या स्थान का मुहताज नहीं है। लौकी या तुंबी अठसठ तीर्थों का स्नान करने के उपरांत भी अपना स्वभाव नहीं त्याग पाती :

लउकी अठसठि तीरथ न्हाई ॥
कउरापनु तऊ न जाई ॥ *(पन्ना ६५६)*

तीर्थों पर जाकर भी मन को धैर्य नहीं आता, वहां भी अधिकतर लोग पुण्य-पाप में लगे रहते हैं:

तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥
चार अचार रहे उरझाइ ॥ *(पन्ना ३२५)*

पितृ-पूजा की महत्ता को अस्वीकार करते हुए भक्त कबीर जी कहते हैं कि जब पितृ जीवित होते हैं तो उनकी लोग उपेक्षा करते हैं, पर उनकी मृत्यु के उपरांत उनका श्राद्ध करते हैं। जो भोजन मिट्टी के देवी-देवता बनाकर उनके आगे रख दिया जाता है उसे वे खाने में तो असमर्थ रहते हैं पर कौवों और कुत्तों को मौज लग जाती है। यदि पितृों में भोजन ग्रहण करने की सामर्थ्य होती तो वे अपनी मनभावक वस्तुएं मांग सकते थे, पर वे

ऐसा नहीं कर सकते, इसलिये वे उनके निमित अर्पित खाद्य भी ग्रहण करने से असमर्थ हैं :

जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही ॥
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि
कऊआ कूकर खाही ॥
मो कउ कुसलु बतावहु कोई ॥
कुसलु कुसलु करते जगु बिनसै
कुसलु भी कैसे होई ॥रहाउ ॥
माटी के करि देवी देवा तिसु आगै जीउ देही ॥
ऐसे पितर तुमारे कहीअहि आपन न लेही ॥२ ॥

(पन्ना ३३२)

वेद, पुराण, स्मृतियों के किए पाठ भी तभी सफल हैं जब उनमें निहित उचित भावना को समझा जाये :

बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बीचारै ॥

(पन्ना १३५०)

वेद-पुराण पढ़कर कर्मकांडों पर आशा रखने से कोई लाभ नहीं होता। स्मृतियों द्वारा निर्धारित वर्णाश्रम और कर्मकांड सांकलों की भांति हैं, जिन्होंने श्रद्धालुओं को जकड़ा हुआ है। इनसे छुटकारा प्राप्त करना कठिन है :

बेद की पुत्री सिंम्रिति भाई ॥
सांकल जेवरी लै है आई ॥ *(पन्ना ३२९)*

भक्त कबीर जी ने रखे जाने वाले व्रतों को भी कर्मकांड से अधिक कुछ नहीं माना :

कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै
अहोई राखै नारि ॥
गदही होइ के अउतरै भारु सहै मन-चारि ॥

(पन्ना १३७०)

भक्त कबीर जी अपनी बाणी में बहुत ही तार्किक ढंग से समझाते हैं कि कर्मकांडी मनुष्य प्रभु को, धर्म को मात्र खिलौना समझते हैं :

झगरा एकु निबेरहु राम ॥
जउ तुम अपने जन सौ कामु ॥१ ॥ रहाउ ॥
इहु मनु बडा कि जा सउ मनु मानिआ ॥
रामु बडा कै रामहि जानिआ ॥
ब्रहमा बडा कि जासु उपाइआ ॥
बेदु बडा कि जहां ते आइआ ॥२ ॥
कहि कबीर हउ भइआ उदासु ॥
तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥३ ॥ *(पन्ना ३३१)*

जाति के नाम पर औरों के साथ असमानता का व्यवहार किया जाता है। भक्त कबीर जी कहते हैं कि मां के गर्भ में कुल-जाति नहीं होती। ब्राह्मण को जनेऊ का तथा वेद पढ़ने का अभिमान है। वे वेद-विद्या पढ़कर भी मांगते फिरते हैं। योगी भी मुद्रा, खफनी और झोली आदि के धार्मिक भेस धारण कर के कुमार्ग पर चल पड़ा है और घर-घर मांगता फिरता है। भक्त कबीर जी योगी, यती, तपी, सन्यासी, सरवड़े, बैरागी, मौनधारी, जटाधारी, ज्योतिषी और व्याकरण के विद्वानों को भी (परमात्मा के प्रति) अज्ञानतावश वास्तविक मार्ग से भटके हुए और आवागमन के चक्र में पड़े हुए मानते हैं :

जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना ॥
लुंजित मुंजित मोनि जटाधर अंति तऊ मरना ॥
ता ते सेवीअले रामना ॥
रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥

(पन्ना ४७६)

भक्त जी यह भी कहते हैं कि सनक, सनंद, शिव, शेषनाग आदि भी धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने में असमर्थ रहे हैं :

सनक सनंद महेस समानां ॥
सेखनागि तेरो मरमु न जानां ॥ (पन्ना ६९१)

भक्त कबीर जी कहते हैं कि कई लोग मात्र शरह के दीवाने होकर व्यर्थ ही जीवन गंवा रहे हैं :

रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥
आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥
(पन्ना ४८३)

वे काजी को कहते हैं कि धार्मिक पुस्तकें पढ़ने का तब तक कोई लाभ नहीं है जब तक उसमें दर्ज उपदेशों पर अमल न किया जाए। वे मुल्ला को ऊंचे चढ़कर बांग देने पर कहते हैं कि खुदा बहरा नहीं है :

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि
सांई न बहरा होइ ॥
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥
(पन्ना १३७४)

वे कहते हैं कि मैं हज करने काबे गया तो खुदा ने कहा, तुझे किसने भ्रम-जाल में डाल दिया है?

कबीर हज काबे हउ जाइ था
आगै मिलिआ खुदाइ ॥
सांई मुझ सिउ लरि परिआ
तुझे किन्हि फुरमाई गाइ ॥ (पन्ना १३७५)

काजी को वे कहते हैं :

काजी तै कवन कतेब बखानी ॥
पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥
(पन्ना ४७७)

भक्त कबीर जी मुसलमान को सच्चा मुसलमान, हिंदू को सच्चा हिंदू, योगी को सच्चा योगी, काजी को सच्चा काजी बनने का संदेश देते हैं। असली काजी के गुणों की चर्चा करते हुए वे कहते हैं :

सो मुलां जो मन सिउ लरै ॥
गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ॥
काल पुरख का मरदै मानु ॥
तिसु मुला कउ सदा सलामु ॥१ ॥
है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥
दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥१ ॥ रहाउ ॥
काजी सो जु काइआ बीचारै ॥
काइआ की अगनि ब्रहमु परजारै ॥
सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ (पन्ना ११५९)

इस तरह का मुल्ला, काजी आदरणीय है जो आवागमन के चक्र से मुक्त है।

भक्त कबीर जी कहते हैं कि ब्राह्मण वो है जो देवी-देवताओं को नहीं बल्कि निर्गुण, निराकार ब्रह्म की भक्ति, स्मरण, विचार करता है। वे ऊंच-नीच वाली जाति-प्रथा पर करारी चोट करते हुए फरमान करते हैं :

कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥रहाउ ॥
जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥२ ॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारे ॥ (पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी कहते हैं कि कई लोग सिर्फ दूसरों को उपदेश देते हैं, उनके अपने अंदर कोई ठहराव नहीं आता। ऐसे लोग औरों की राशि (पूंजी) की रक्षा करने का यत्न करते हुए अपने गुणों को भी गंवा लेते हैं :

कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥
रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु ॥
(पन्ना १३६९)

भक्त कबीर जी के अनुसार वास्तविक योगी वो है जो ज्ञान को गोदड़ी बनाता है, प्रभु-चरणों में लगी हुई सुरति की सूई तैयार करता है, गुरु-शब्द रूपी धागा बना कर उस सूई में डालता है, दया की पहौड़ी बनाता है, प्रभु-प्रेम अपने हृदय में बसाता है और अपनी सुरति प्रभु-चरणों में लगाये रखता है। प्रभु-नाम का स्मरण ही सबसे अच्छा योग है :

खिंथा गिआन धिआन करि सूई
सबदु तागा मथि घालै ॥
पंच ततु की करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥
(पन्ना ४७७)

भक्त कबीर जी कहते हैं कि ब्राह्मण उस प्रभु को क्यों भूल जाता है जिसके मुख से वेद और गायत्री निकले हैं? पंडित उस प्रभु को स्मरण क्यों नहीं करता जिसने समस्त संसार बनाया है? हे ब्राह्मण! तू प्रभु-नाम का स्मरण नहीं करता, इसी कारण तू नरक भोग रहा है :

जिह मुख बेदु गाइत्री निकसै
सो किउ ब्रहमनु बिसरु करै ॥
जा कै पाइ जगतु सभु लागै सो
किउ पंडितु हरि न कहै ॥
काहे मेरे बाम्हन हरि न कहहि ॥
रामु न बोलहि पाडे दोजकु भरहि ॥ (पन्ना ९७०)

प्रभु-स्मरण ही माया की तृष्णा को मिटा सकता है। प्रभु का नाम ही ऐसा है जिसमें जुड़ कर जीव अडोल रह सकता है। यह नाम मनुष्य के अंदर ही है :

निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥
कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥
इसु परचाइ परचि रहु एसु ॥ (पन्ना ३२५)

प्रभु जिस पर कृपा कर उसके हृदय में निवास करता है, उसमें प्रभु-नाम की सुगंधि का वास हो जाता है। जो मनुष्य प्रभु का स्मरण करते हैं वे उनसे भिन्न नहीं रह जाते, वे उसके साथ एक रूप हो जाते हैं। ऐसे जीव के मन में शांति और स्थिरता पैदा हो जाती है और उसके मन से हउमै और द्वैत-भाव आदि समाप्त हो जाते हैं :

कवला चरन सरन है जा के ॥
कहु जन का नाही घर ता के ॥३ ॥
सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥
सो संम्रथु निज पति है दाता ॥४ ॥
कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥
जा के हिरदै अवरु न होई ॥ (पन्ना ३३०)

गुरु-शब्द जीव को ऐसा बना देता है कि वह न बुरा बोलता है, न बुरा सुनता है और न ही उसके पांव बुरे कार्य की ओर उठते हैं। वह निर-अहंकार हो जाता है। उसका हृदय प्रभु-चरणों में जुड़ जाता है।

भक्त कबीर जी भक्ति के साथ सच्चे धर्म के

लिए साधसंगत को बहुत महत्ता देते हैं। वे कहते हैं कि असली बैकुंठ साधसंगत में ही है :

भगति बिनु बिरथे जनमु गइओ ॥
साधसंगति भगवान भजन बिनु कही न सचु रहिओ ॥
(पन्ना ३३६)

उचित मार्ग पर चलने के लिये गुरु मार्गदर्शन करता है। गुरु बहुत सोच-समझ के बाद धारण करना चाहिए। सच्चे गुरु की प्राप्ति से अंधकार दूर होकर अमूल्य निधि प्राप्त हो जाती है :

—सो गुरु करहु जि बहुरि न करना ॥
(पन्ना ३२७)

—गुपता हीरा प्रगट भइओ
जब गुर गम दीआ दिखाई ॥ *(पन्ना ४८३)*

—सतिगुरु मिलै अंधेरा चूकै इन बिधि माणकु लहीऐ ॥
(पन्ना ३३४)

भक्त कबीर जी के अनुसार जब नम्रता वाला स्वभाव जीव के अंदर प्रवेश कर जाता है तो अहंकार वाले स्वभाव का दबाव स्वयं ही समाप्त हो जाता है। जब नम्रता वाला स्वभाव सदा साथ रहता है तो अंहकार-बुद्धि का विनाश हो जाता है। भक्त कबीर जी दया-गुण के धारण पर भी जोर देते हैं :

कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु
धरमु दइआ करि बाड़ी ॥ *(पन्ना ९७०)*

जिस जीव में नम्रता, दया जैसे गुण होंगे तभी वह सब जीवों, सब धर्मों को एक समान जानेगा, उनका सत्कार करेगा। भक्त कबीर जी कहते हैं कि कई लोग अपने मत को सच्चा साबित करने के लिये वाद-विवाद करते हैं। वे ज़रा अपने मन में विचार करके देखें कि हिंदू-मुसलमान कहां से पैदा हो गये? किसने ये रास्ते बनाये? सब लोग प्रभु ने ही पैदा किये हैं। वो किसी के साथ भेदभाव नहीं करता। मात्र जाति-आधारित होने से ही स्वर्ग-नरक नहीं मिलता :

हिंदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई ॥
दिल महि सोचि बिचारि कवादे
भिसत दोजक किनि पाई ॥ *(पन्ना ४७७)*

भक्त कबीर जी कहते हैं कि हे भाई! धार्मिक पुस्तकों का विवाद छोड़ो। मैंने तो एक प्रभु का आश्रय लिया है। कई वाद-विवाद में उलझकर व्यर्थ में अपना जीवन गंवा देते हैं :

छाडि कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥
कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ॥
(पन्ना ४७७)

भक्त कबीर जी काजी को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हम मसकीन (निमाणे) लोग हैं। हमें भी तो प्रभु ने ही बनाया है। मज़हब (धर्म) का सबसे बड़ा मालिक तो प्रभु है। वह किसी के साथ धक्का करने की आज्ञा नहीं देता। काजी तेरी बातें ठीक नहीं हैं। मात्र रोजा रखने, नमाज पढ़ने, कलमा पढ़ने से बहिश्त नहीं मिल जाता। प्रभु तो मनुष्य के हृदय में है। वह उसी को मिलता है जो यह बात समझ लेता है। जो मनुष्य न्याय कर रहा है, जो प्रभु को प्रज्ञा से पहचानता है, वह मानो कलमा पढ़ रहा है। जो कामादि को वश में कर लेता है वह मानो मुस्सला बिछा रहा है, वही मजहब को पहचानता है। जब मनुष्य हउमै (द्वैत,

मैं, मेरी) को त्यागकर, प्रभु के वास्तविक स्वरूप को पहचानकर दूसरों को अपने जैसा समझता है तभी बहिश्त का हकदार बन सकता है। भक्त कबीर जी के प्रभु दशरथ-पुत्र श्रीराम नहीं, बल्कि सत्य, सर्वव्यापी, निर्गुण, निराकार, परमात्मा हैं, जिन्हें लोगों ने एक नाम 'राम' भी दिया है। भक्त कबीर जी कहते हैं कि जो लोग माथे पर तिलक लगा लेते हैं और हाथ में माला पकड़ लेते हैं, अर्थात् धार्मिक पहरावा बना लेते हैं और समझते हैं कि प्रभु उनके वश में हो गया है, वे प्रभु को मात्र खिलौना समझ लेते हैं कि वो उनके अनुसार चलेगा। भक्त कबीर जी के अनुसार देवी-देवताओं की पूजा करना, उनके आगे फूल चढ़ाना व्यर्थ है। प्रभु-भक्ति के बिना अन्य सब पूजा-अर्चना व्यर्थ है :

माथे तिलकु हथि माला बानां ॥
लोगन रामु खिलउना जानां ॥ (पन्ना ११५८)

भक्त कबीर जी के अनुसार मुसलमान समझते हैं कि खुदा सिर्फ काबे में रहता है। यदि ऐसा है तो बाकी देश किसका है? हिंदू समझता है कि प्रभु का निवास मात्र मूर्ति में है। भक्त कबीर जी के अनुसार "दुह महि ततु न हेरा॥" ब्राह्मण एकादशी का व्रत रखते हैं और मुसलमान रोजे। यदि ऐसा करना सफल है तो बाकी महीने महत्त्वहीन हो जाते हैं। भक्त कबीर जी कहते हैं :

कबीरु पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥
कहतु कबीर सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना ॥
केवल नामु जपहु रे प्रानी तब ही निहचै तरना ॥
(पन्ना १३४९)

भक्त कबीर जी कहते हैं कि समस्त जीवों में एक प्रभु को देखो तो स्वयं सारे वैर-विरोध समाप्त हो जायेंगे :

सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥
कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा ॥
(पन्ना ४८३)

वाद-विवाद के लिए वेद-कुरान के हवाले देकर बातें करनी व्यर्थ हैं। लोग ज्ञान-प्रदर्शन करते हुए खुश हो-होकर बहस करते हैं। भक्त कबीर जी कहते हैं कि मैं बहस की खातिर तुम्हारी बहस वाली विद्या नहीं पढ़ता, न ही धार्मिक विवाद करता हूं अर्थात् आत्मिक जीवन के लिए मैं कोई विद्वता भरी धार्मिक चर्चा की आवश्यकता नहीं समझता :

बिदिआ न परउ बादु नही जानउ ॥ (पन्ना ८५५)

भक्त कबीर जी ने धर्म के ठेकेदारों द्वारा आडंबरयुक्त क्रियाओं में उलझे हुए सभी मनुष्यों को धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाने का यत्न किया है। उन्होंने आदर्श धर्म के लिए उच्च नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को आधार मानते हुए धार्मिक संकीर्णता और असमानता वाले सामाजिक प्रबंध के दमनकारी प्रभाव से स्वतंत्र कराने के लिए एकता, प्रेम, सत्य का संदेश दिया है।

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर हम डॉ. आर्य प्रसाद त्रिपाठी के इस कथन से पूर्ण रूप से सहमत हैं कि "हिंदू-मुसलमान में जो संघर्ष चल रहा था उसमें से आग की भयानक लपटें निकल रही थीं। इन लपटों को शांत करने के लिए भक्त कबीर जी के शांति-संदेश ने जल-धारा का कार्य

किया है। भक्त कबीर जी का अनूठा कदम था, जिसके द्वारा दो विभिन्न संस्कृतियों को जोड़कर मानवतावाद की स्थापना की गई। भक्त कबीर जी के इस मानव प्रेम में समाज का पुनर्स्थान है।''[२]

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा भी डॉ आर्य प्रसाद त्रिपाठी की उपरोक्त विचारधारा से मिलते-जुलते विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि ''भक्त कबीर जी ने स्पष्ट कहा है कि कोई भी धर्म झूठ बोलना नहीं सिखाता। झूठे आचरण की शिक्षा देने वाला धर्म धर्म हो ही नहीं सकता। उन्होंने धर्म के उचित दायित्व को सामाजिक संदर्भ में उभारा। वे चाहते थे कि असत्य मूल्य सामाजिक गति को धीमा न कर दें, इसलिए उन्होंने मध्ययुगीन समाज की आधार-भूमि के पुन: सृजन का प्रयास किया।''[३]

भक्त कबीर जी ने अपने समय की परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए धर्म को बाल की खाल उतारने वाले लोगों के घेरे से बाहर निकालकर सर्वसाधारण तक पहुंचाने का प्रयास किया। भक्त कबीर जी कटुता को मिटाकर भाईचारे की भावना स्थापित करने का प्रयास करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने धार्मिक पुस्तकों के कोरे सतही ज्ञान के आधार पर उपजी एकतरफा संकीर्णता को दूर करने का यत्न किया है। उन्होंने धार्मिक वाद-विवादों से ऊपर उठकर सभी जीवों में प्रभु, अल्लाह, राम को सर्वोच्च हस्ती माना जो सब जीवों, समस्त सृष्टि का रचयिता है, जिसके स्मरण से सभी द्वैत समाप्त हो जाते हैं। भक्त कबीर जी के अनुसार, जिस व्यक्ति के हृदय में जीवन के उचित कार्य की सूझ है वहां कोई खतरा, कोई कठोरता नहीं रह जाती। जिस हृदय में अभी बेरहमी है वहां अभी 'अलहु रामु' का निवास नहीं हुआ :

जह अनभउ तह भै नही जह भउ तह हरि नाहि ॥
कहिओ कबीर बिचारि के संत सुनहु मन माहि ॥
(पन्ना १३७४)

भक्त कबीर जी ने अल्लाह और राम दोनों को एक मानकर उनकी आराधना की। उन्हें आध्यात्म के उस चरम शिखर का अनुभव हो गया जहां सभी भिन्नताएं, विरोध, अवरोध, द्वैत, खत्म हो जाते हैं। उन्होंने जात-पात, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब के सभी वैमनस्यों को मिटाकर मानवीय मूल्यों की स्थापना पर जोर दिया। उन्होंने माना कि जब जीव को ''अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरत के सभ बंदे'' तथा ''कबीर पूंगरा राम अलह का'' का ज्ञान हो जाता है, तब जीवन के वास्तविक मनोरथ का पता चल जाता है और जीव के सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं और सर्वत्र सर्वव्यापी धर्म का प्रसार हो जाता है :

कहु कबीर सुखि सहजि समावउ ॥
आपि न डरउ न अवर डरावउ ॥ (पन्ना ३२७)

संदर्भ-सूची :

१. डॉ. गुरनाम कौर (बेदी), *गुरू ग्रंथ साहिब विच दरज बाणी दा आलोचनातमक अधिऐन,* गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९८७, पृष्ठ १२३-२४

२ *कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन,* सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद, १९७४, पृष्ठ २५६

३. *कबीर : एक विवेचन,* हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली, पृष्ठ ३३६.

लासानी शहीद बाबा बंदा सिंघ बहादुर

-स. सुरजीत सिंघ*

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जन्म १६ अक्तूबर, सन् १६७० में कश्मीर रियासत के ज़िला पुंछ के तछ्छल गांव में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामदेव भारद्वाज था जो राजपूत किसान परिवार से सम्बंधित थे। बाबा जी के बाल्यकाल का नाम लछमण दास था। आपकी आयु अभी १५ वर्ष की थी कि एक दिन शिकार खेलते समय एक गर्भवती हिरणी का शिकार हो जाने पर हिरणी ने पेट में पल रहे (अजन्मे) बच्चों सहित आपके सामने तड़प-तड़पकर प्राण त्याग दिए, जिससे आपके हृदय को गहरा आघात पहुंचा। विचलित और दुखी लछमण दास का मानो जीवन ही परिवर्तित हो गया और उसने घर-परिवार छोड़कर एकांतवास में रहते हुए वैराग्य धारण कर लिया। लछमण दास वैरागी साधु जानकी प्रसाद को अपना गुरु धारण कर वैरागियों के टोले में जा मिला। अब उसका नाम बदलकर माधोदास हो गया। विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते-करते माधोदास ने महाराष्ट्र के नांदेड़ नामक स्थान पर गोदावरी नदी के किनारे शांत व एकांत, सुंदर स्थान पर अपना आश्रम स्थापित कर लिया।

दक्षिण दिशा की यात्रा के समय नांदेड़ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की माधोदास के साथ उसके आश्रम पर मुलाकात हुई। माधोदास गुरु जी की दिव्यता, तेजस्व, शक्ति, आध्यात्मिकता से इतना अधिक अभिभूत हुआ कि सब कुछ भूलकर गुरु जी की शरण में नत्मस्तक हुआ और निवेदन करने लगा, ''हे प्रभु! मैं आपका ही बंदा हूं, जो पूर्णतया सेवा में समर्पित हो चुका हूं, इसलिए कृप्या मुझे अपना सिक्ख बना लीजिए।'' गुरु जी ने ३८ वर्षीय माधोदास को अमृत-पान कराकर, सिंघ सजाकर उसका नाम 'बंदा सिंघ' रख दिया और 'बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया। मुगल हकूमत से टक्कर लेने के लिए हर पक्ष से सक्षम हो जाने पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन्हें खालसा फौज का जत्थेदार बनाकर पंजाब के लिए रवाना किया।

'पंथ प्रकाश' के अनुसार बाबा बंदा सिंघ बहादुर को एक केसरी ध्वज, एक नगाड़ा, पांच तीर गुरु जी ने बख्शिश स्वरूप प्रदान कर सलाहकारों के रूप में पांच सिंघ-- भाई विनोद सिंघ, भाई काहन सिंघ, भाई बाज़ सिंघ, भाई दया सिंघ एवं भाई रण सिंघ के अतिरिक्त कुछ अन्य सिक्ख शूरवीरों को साथ कर दिया। गुरु जी ने अपने प्रमुख सिक्खों के नाम बाबा बंदा सिंघ

*५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)-३२४००७, फोन : ९४१३६-५१९१७

बहादुर की सहायता करने के आदेशस्वरूप लिखे 'हुकमनामे' प्रदान कर आशीर्वाद देते हुए बाबा जी को पंजाब की ओर रवाना कर दिया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर अभी रास्ते में ही थे कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ज्योति-जोत समा गए। सरगोधा पहुंचकर बाबा जी ने गुरु जी द्वारा सहायतार्थ लिखे 'हुकमनामे' प्रमुख सिक्खों को भेज दिए। 'हुकमनामे' प्राप्त होते ही बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में केसरी ध्वज तले हर तरफ से सिक्ख जत्थे पहुंचने लगे, जिनकी संख्या कुछ समय में ही ४००० घुड़सवार और ८००० पैदल तक पहुंच गई।

दिल्ली से कूच करते ही बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सोनीपत और कैथल पर विजय प्राप्त कर खालसई निशान झुला दिए। बाबा जी के साथ खालसा फौज की संख्या लगातार बढ़ती हुई ४०००० तक जा पहुंची, जिसमें कुछ संख्या हिंदू एवं मुसलमान सैनिकों की भी थी। इसके बाद खालसा फौज ने समाणा पर आक्रमण कर दिया। भयानक युद्ध में बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने समाणा का इलाका मुगलों से जीत लिया। इसी प्रकार घुड़ाम, ठसका, मुस्तफाबाद, कपूरी इत्यादि पर विजय प्राप्त करते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर साढौरा की ओर बढ़ गए। साढौरा पर जीत हासिल कर खालसा फौज छत बनूड़ की ओर अग्रसर हुई। अब तक मालवा और माझा क्षेत्र से अनेक सिक्ख जत्थे बाबा जी के साथ आ मिले थे। छत बनूड़ पर जीत प्राप्त करने के उपरांत बाबा बंदा सिंघ बहादुर अपने मुख्य उद्देश्य सरहिंद के बहुत निकट पहुंच गए थे।

स्मरणीय है कि सरहिंद वह स्थान है जहां पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादे—बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तहि सिंघ जी को मुगल सूबेदार वज़ीर खान ने दीवार में जिंदा चिनवाकर शहीद कर दिया था।

शहादत की दीवानी खालसा फौज ने सरहिंद से १० मील दूर चप्पड़चिड़ी नामक स्थान पर मोर्चा संभाल लिया। खालसा फौज और वज़ीर खान की अगुआई में मुगल सेना के बीच घमासान युद्ध छिड़ गया। वज़ीर खान मारा गया और मुगल सेना अपना जानी-माली नुकसान करवाकर भाग खड़ी हुई। खालसा फौज ने सरहिंद में प्रवेश कर उसे पूरी तरह से अपने अधीन कर लिया। वज़ीर खान का मंत्री सुच्चा नंद, जिसकी छोटे साहिबजादों को शहीद करवाने में विशेष भूमिका रही थी, की पूरी हवेली को मलबे के ढेर में परिवर्तित कर दिया गया।

जनसाधारण की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर जीते हुए इलाकों में राज्य प्रबंध की व्यवस्था भी करते चले जा रहे थे, जिसका उद्देश्य स्वतंत्र सिक्ख राज्य की स्थापना करना था। सिक्ख राज्य की स्थापना हेतु बाबा जी ने साढौरा और नाहन के बीच स्थित मुखलिसगढ़ को 'लोहगढ़' का नाम दे राजधानी बनाया। यहां से बाबा जी ने श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर सिक्ख राज्य की मुहरें एवं सिक्के जारी किए।

विजय का क्रम निरंतर जारी रखते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सहारनपुर, ननोता आदि शहरों पर कब्ज़ा जमा लिया। मलेरकोटला पर आक्रमण के समय शहर को किसी प्रकार की कोई क्षति नहीं पहुंचे इसका विशेष ध्यान रखा गया, क्योंकि मलेरकोटला के नवाब शेर मोहम्मद खान ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादों की शहादत का प्रतीकात्मक कड़ा विरोध किया था। अब बाबा बंदा सिंघ बहादुर पश्चिम की ओर बढ़ते हुए जलालाबाद, जलंधर, रियाड़की आदि शहरों को जीतते हुए लाहौर के समीप जा पहुंचे। इस प्रकार लगभग संपूर्ण पूरबी पंजाब में अब सिक्ख राज्य की स्थापना हो चुकी थी। लोहगढ़ के किले को पूरी तरह से फौजी कार्यवाही हेतु तैयार कर दिया गया, जहां बाबा बंदा सिंघ बहादुर दरबार लगाकर गुरु-आज्ञानुसार जनता के दुख-दर्द सुन उनका शीघ्र निराकरण करने का प्रबंध किया करते थे। जागीरदारी-प्रथा का उन्मूलन करते हुए भूमि जोतने वाले किसानों को ही भूमि का मालिकाना अधिकार दिलाना बाबा जी की पंजाब को प्रमुख देन थी जिस कारण पंजाब की अर्थव्यवस्था में अपेक्षाकृत अधिक सुधार आया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने कलानौर और बटाला पर भी जीत दर्ज कर कब्जा जमा लिया।

निरंतर विजय हासिल करने वाले बाबा जी एवं उनके सिक्ख शूरवीर सैनिक गुरदास नंगल की कच्ची गढ़ी में मुगल सेना के घेरे में आ गए। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सिक्ख सैनिक मुगल सेना का डटकर मुकाबला करते रहे। मुगल सेना द्वारा गढ़ी की लंबे समय तक सख़्त घेराबंदी की गई, जिस वजह से बाबा बंदा सिंघ बहादुर के पास राशन एवं गोला-बारूद धीरे-धीरे समाप्त होता चला गया। सिंघों द्वारा कई दिनों तक भूखे-प्यासे ही मुकाबला किया गया। शाही मुगल सेना ने गुरदास नंगल की गढ़ी पर कब्जा जमा लिया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ ७०० से अधिक सिक्ख शूरवीरों को बंदी बना कर लाहौर लाया गया। लाहौर से अति दयनीय एवं दिल दहला देने वाली स्थिति में जुलूस के रूप में मुगल सेना के घेरे में दिल्ली लाया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को लोहे की जंजीरों से जकड़े हुए लोहे के पिंजरे में बंद कर हाथी पर सवार कर रखा हुआ था।

मुगल हुकूमत द्वारा भूखे-प्यासे सिक्ख शूरवीर बंदियों को शहीद किए जाने का काम प्रारंभ किया गया, जिसके अनुसार प्रतिदिन १०० सिक्ख शूरवीर बंदी क्रूरता स्वरूप शहीद किए जाने लगे। यह शहीदी सिलसिला कई दिनों तक जारी रहा।

सबसे आखिर में बाबा बंदा सिंघ बहादुर एवं उनके ४ वर्षीय पुत्र बाबा अजै सिंघ को शहीदी स्थल पर लाया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर पर मुगल हुकूमत द्वारा दबाव बनाया गया कि वे या तो इस्लाम धर्म कबूल कर लें अन्यथा लोमहर्षक शहीदी के लिए तैयार हो जाएं। बाबा जी के सिक्खी के प्रति अडिग विश्वास एवं दृढ़ निश्चय को किसी भी प्रकार का भय एवं लालच डिगा न सका और उन्होंने शहीदी का मार्ग स्वीकार

किया। क्रूर यातनाओं की शृंखला में पहले उनके सुपुत्र बाबा अजै सिंघ को उनकी आंखों के सामने शहीद कर उसका धड़कता हुआ कलेजा जबरन उनके मुंह में डाला गया। बाबा जी फिर भी विचलित न हुए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की लासानी शहादत के असहनीय दृश्य के बारे में प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. गंडा सिंघ ने अपनी पुस्तक 'बंदा सिंघ बहादुर' (पृष्ठ २३३-३४) में लिखा है— ''पहले जल्लादों ने छुरे की नोंक से उनकी दाईं आंख निकाली, फिर बाईं आंख निकाली। इसके पश्चात् उनका बायां पांव काट दोनों हाथ शरीर से अलग कर दिए गए। सुलगती लाल सुर्ख गर्म सलाखों से बाबा जी का अंग-अंग नोचकर बोटी-बोटी शरीर से अलग किया गया। अंत में शीश काटकर उनका शरीर टुकड़े-टुकड़े कर शहीद कर दिया गया।''

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की अद्वितीय हृदय विदारक शहादत को मुस्लिम इतिहासकार खाफी खान ने स्वयं अपनी आंखों से देखा। वो अपनी पुस्तक 'मुंतखब-उल-लबान' में लिखता है-- ''बहुत कुछ ऐसा खौफ़नाक घटित हुआ जिस पर चश्मदीद गवाह के अतिरिक्त कोई और शायद विश्वास न कर सके। इस वास्तविकता से कोई भी इतिहासकार इनकारी नहीं हो सकता कि असहनीय व अकथनीय कष्ट देने के अतिरिक्त सुलगते हुए लाल गर्म जंबूरों से बाबा बंदा सिंघ बहादुर के शरीर से मांस नोचा गया।''

स्वामी बी. सरस्वती ने अपनी पुस्तक 'बंदा सिंघ बहादुर' (पृष्ठ १६) में लिखा है कि ''बाबा बंदा सिंघ बहादुर एक देश-भक्त था, एक अच्छा सिक्ख सैनिक व भारत की मुक्ति का जोशीला इच्छुक था।'' प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार मैकलेगर के अनुसार, ''बाबा बंदा सिंघ बहादुर जरनैलों व योद्धाओं में सर्वश्रेष्ठ स्थान रखता था। उसका नाम ही पंजाब व पंजाब से बाहर मुगलों में दहशत फैलाने के लिए काफी था।'' इतिहासकार स. करम सिंघ ने अपनी पुस्तक 'बंदा सिंघ बहादुर' (पृष्ठ १९३) में लिखा है— ''बंदा सिंघ बहादुर इतना ज़ोरावर और फुर्तीला था कि तीर और खंजर के बिना अन्य कोई हथियार उसके मन को अच्छा नहीं लगता था। शक्तिशाली घुड़सवार तथा शरीर का हृष्ट-पुष्ट था और लगातार कई दिनों की मंजिलें भी उस पर असर नहीं डालती थीं।'' इसी क्रम में मुस्लिम इतिहासकार मोहम्मद शफी अपनी पुस्तक 'मिरात-उल-वारदात' में लिखता है कि ''शख्सियत के धनी बाबा बंदा सिंघ बहादुर की चमकती हुई आंखें एवं तीव्र दृष्टि उसके दुश्मनों पर विशेष असर छोड़े बिना नहीं रहती थी।''

पंजाबी लोकनायक : महाराजा रणजीत सिंघ

-डॉ. गुरचरन सिंघ*

पंजाबियों के अच्छे भाग्य हैं कि उनको स. रणजीत सिंघ जैसा शूरवीर, निष्पक्ष तथा सर्वप्रिय महाराजा मिला। उनकी छाप समकालीन समाज पर तो पड़नी ही थी लेकिन आने वाली पीढ़ियां भी उनके कार्यों को याद कर गर्व से सरशार हो जाती हैं। इतिहासकारों की नज़र में महाराजा रणजीत सिंघ एक आदर्श सम्राट थे। वे गहरी दृष्टि से लोगों की दिल की बात जान लेते थे। वीरता में उनकी कीर्ति के कारण ही उनकी तुलना मिस्र के पाशा महिमत अली, फ्रांस के सम्राट निपोलियन बोनापार्ट, मैसूर के सुलतान टीपू तथा प्राचीन भारत के सिरमौर योद्धाओं व योग्य शासकों— सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य एवं समुद्र गुप्त मौर्य के साथ की जाती है। प्रसिद्ध प्रबंधक के रूप में वे शेरशाह सूरी तथा अकबर महान से कम नहीं थे। वे हातिमताई जैसे दयालु एवं दानी थे। चाहे वे धार्मिक सिद्धांतों की बारीकियां जानने वाले व्यक्ति नहीं थे मगर श्री गुरु ग्रंथ साहिब एवं अकाल पुरख में उनकी अगाध श्रद्धा थी।

पंजाब की भौगोलिक तथा भावुक, राजनीतिक तथा सामाजिक एकता और सांझ के निर्माता थे महाराजा रणजीत सिंघ। वे हर मन के दिलदादा थे। उनके जैसा सम्राट एशिया भर में कोई नहीं था। इतिहास लेखक मारशमैन के अनुसार, ''कुसतुनतुनीआ तथा पीकिंग के मध्य वाले क्षेत्र में उनके जैसा विचित्र एवं विशेष कोई अन्य व्यक्ति नहीं था।''[१] सर लैपल ग्रिफ़न महाराजा रणजीत सिंघ के देहांत के कई वर्ष बाद लिखता है — ''उनका नाम पंजाब में हर किसी की जुबान पर चढ़ा हुआ है। उनकी तसवीर अभी भी हर झुग्गी तथा हर महल में यादगार के तौर पर संभाली हुई है।''[२] फ़कीर अज़ीज-उद-दीन की अंश में से पाकिस्तान में बसते सैयद वहीद-उद-दीन ने महाराजा की लोक-प्रसिद्धि, उनकी सर्वप्रियता, उनके गुणों, उनकी जीतों का लेखा-जोखा करते हुए गर्व से लिखा है— ''रणजीत सिंघ लोगों के जहन में अभी भी वैसे ही जिंदा हैं, जैसे वे अपने भौतिक जीवन के दौरान जिंदा रहे थे।''

महाराजा रणजीत सिंघ का हरमन-प्यारा चित्र विजयी व दयालु बादशाह के रूप में उभरता है। महाराजा रणजीत सिंघ की दयालुता उनकी शाही आन-शान तथा राज्य-शक्ति को बहुत पीछे छोड़ गई थी, जो अभी तक लोगों के दिलों में घर किए बैठी है।

महाराजा रणजीत सिंघ की शख़्सियत पंजाबी साहित्य का अभिन्न अंग बन चुकी है। वर्तमान समय में महाराजा रणजीत सिंघ के बारे में उपन्यास विधा की रचनायें, जिनके लेखक ज्ञानी

*१०/११, सुभाष कालोनी, जीरा, जिला फिरोजपुर (पंजाब)

तरलोक सिंघ, ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, ज्ञानी भजन सिंघ हैं, काफी चर्चित रहीं। प्रिं. संत सिंघ (सेखों) ने नाटकों में, स. विधाता सिंघ तीर ने काव्य में तथा दर्जनों ही अन्य कवियों ने भी महाराजा रणजीत सिंघ की शख्सियत को काव्य द्वारा अमर किया है। अगर महाराजा रणजीत सिंघ के समकालीन या निकट-समकालीन लेखकों तथा कवियों की अनुभूति से अंदाज़ा लगाएं तो महाराजा रणजीत सिंघ का अक्स और भी ज्यादा बलवान लगता है।

शाह मुहम्मद महाराजा रणजीत सिंघ की वीरता के गीत गाता हुआ लिखता है :

महांबली रणजीत सिंघ होइआ पैदा,
नाल ज़ोर दे मुलक हलाइ गिआ।
मुलतान, कशमीर, पशौर, चंबा,
जमू, कांगड़ा, कोट निवाइ गिआ।
होर देश लद्दाख ते चीन तोड़ीं,
सिक्का आपणे नाम चलाइ गिआ।
शाह मुहंमदा जाण पचास बरसां,
अच्छा रज्ज के राज कमाइ गिआ।[३]

पंजाब के लोगों की अंग्रेजों के साथ जब १८४५ ई. में जंग हुई तो जंग में अच्छे आगुओं की कमी के कारण भी कवि महाराजा रणजीत सिंघ को याद करता हुआ कहता है :

मुठ मीटी सी पंजाब दी जी,
इन्हां खोल्ह दित्ता अज्ज पाज यारो।. .
शाह मुहंमदा इक सरकार बाझों
फौजां जित्त के अंत नूं हारीआं ने।[४]

इतिहासकारों ने महाराजा रणजीत सिंघ की फौजी शक्ति का सही अंदाजा लगाते हुए निर्णय दिया कि उन्होंने अफगानों का मुंह मोड़ कर पंजाब को राजनीतिक शक्ति तथा सिक्खों को कौम का रुतबा दिया। जनरल गार्डन ने ठीक ही लिखा था कि "सिक्ख अब शक्ति तथा स्वै-विश्वास से मिले-जुले ऐसे निपुण सम्राट के अधीन एक कौम बन चुके थे, जिसने खालसा को सलतनती ताकत का धारक बनाकर इस बात का सदा के लिए फैसला कर दिया था कि पंजाब पर राज्य भविष्य में सिक्खों ने करना है न कि अफगानों ने।"[५]

महाराजा रणजीत सिंघ की सबसे बड़ी देन शांति तथा भाईचारा कायम करना था। उनके राज्य में लोग सुखी बसते थे, चोर-डाकू सिर तक नहीं उठाते थे; औरतें निर्भय होकर चल-फिर सकती थीं। महाराजा सबकी इज्जत के रक्षक थे। जाफ़र बेग ने लिखा है :

अलफ आखि तूं सिफत सरकार वाली,
सिंघ पंथ विचों होइ धुजाधारी।
जिहदे राज कुआरीआं राह तुरीआं,
डरदे छेड़दा नाहिं को खौफ मारी।[६]

कवि साहिब सिंघ, जाफ़र बेग, निहाल सिंघ, गणेश दास आदि ने महाराजा की वीरता, कुशल राज्य-प्रबंध तथा दयालु स्वभाव को अपने काव्य का विषय बनाया है। कवि साहिब सिंघ के अनुसार महाराजा रणजीत सिंघ चढ़दी कला के प्रतीक थे :

सद ही कमर कसी हम देखी,
कबहूं ना सुसती मुख पर पेखी।

(महान कोश, पृष्ठ ८६३)

उनकी सैनिक-प्रशंसा करने में सारे कवि एकमत हैं। कवि निहाल सिंघ 'वार' में लिखता है :

कलानौर, फिलौर, पिशोर ताई,
टक्के देंवदे नी मारे हूरिआं दे।
पैण भाजड़ां चीन मचीन ताई,
काबल कंबदा जर्रा-जर्रा नाल खंघूरिआं दे।४।

जाफ़र बेग लिखता है :

जाफर बेग सिंघां खैबर बस्स कीता,
पईआं भाजड़ां विच कंधार सारी।२।
जाफर बेग सरदार दी धमक डाढी,
टक्के आउंदे चीन मचीन ताई।३।

इस तरह महाराजा रणजीत सिंघ की विजयों के बारे में उपमा करने में कवि गणेश दास भी पीछे नहीं :

प्रिथम पंजाब जीत, नीत मैं प्रबीन भए,
कांगड़े का कोट, देवी दीओ हरखाइ के।
अटक पटक दे सु, लीनी देर कीनी नाहि,
मार सुलतान, कशमीर लीआ धाइ के।
पाछे करी देर सु, पशौर मार लए हए,
अब चढ़े सभ सिंघ मन में खुलसाइ के।

(फतहिनामा गुरू खालसा जी)

ऐसे शक्तिशाली पंजाबी महाराजा का जब २७ जून, १८३९ ई. को देहांत हुआ तो पंजाब की हालत एक विधवा स्त्री जैसी हो गई। महाराजा रणजीत सिंघ सचमुच ऐसे बादशाह थे जिनके आगे बड़े-बड़े राजा झुकते थे। सारे पंजाब का राज्य-भाग तथा सुहाग महाराजा रणजीत सिंघ के साथ ही खत्म हो गया। जाफ़र बेग ने ठीक ही लिखा है :

जाफर बेग जहान विच पिआ रौला,
अज्ज उलट गई हिंद दी पातशाही।[७]

महाराजा रणजीत सिंघ के देहांत से सम्बंधित पंजाबी के उच्च कोटि के विद्वान, खोजी, गुरसिक्ख शख़्सियत डॉ. हरमान सिंघ 'शान' द्वारा महाराजा की दूसरी देहांत-शताब्दी पर लिखी कविता के कुछ शेयर भी बड़े चरितार्थ होते हैं :

गज्जदा लाहौर विच कंबदा नेपाल, चीन,
पंज दरिआवां दा सी माणा रणजीत सिंघ।
जित्त के पशौर जिस काबल नाकाबल कीता,
कदे ना पंजाब ने भुलाणा रणजीत सिंघ।
खखड़ी दी डलीआं दे वांग पाटी कौम सारी,
इको लड़ी विच तां परोइआ रणजीत सिंघ।
मोइआ रणजीत नहीं सी होइआ पंजाब रंडा,
ताहीओं लोकी कूकदे जां मोइआ रणजीत सिंघ।

(पंजाब ते शेरि-पंजाब, पृष्ठ १०)

संदर्भ-सूची :

१) Marshman, J.C., History of India from the Earliest period to the close of Lord Dalohousie's Administration, 3 vols., London, 1867, vol. I, P. 39.
२) Griffin, Sir Lepel, Ranjit Singh, 1905, P. 88.
३) शाह मुहम्मद, सय्यद, जंग सिंघां ते फरंगीआं, बंद नं. ५ तथा जंगनामा शाह मुहम्मद, संपादित भाषा विभाग, पंजाब, पृष्ठ २
४) जंगनामा शाह मुहम्मद, भाषा विभाग, पंजाब, १९८८, पृष्ठ ३०-३१
५) Gordon, General Sir John J.H., The Sikhs, London, 1904, P. 86-87
६) जाफ़र बेग, सीहरफी सरकार दी, बंद नं. १
७) जाफ़रबेग, सीहरफी सरकार दी, १८५५ ई. की हस्तलिखित, बंद नं. २१, देखें डॉ. हरनाम सिंघ शान, पंजाब ते शेरि-पंजाब, पृष्ठ १०

जून, १९८४ ई. में गुरुद्वारों पर हुए फौजी हमले

*-सिमरजीत सिंघ**

सिक्खों के लिए गुरुद्वारा मात्र पूजा-स्थान ही नहीं बल्कि वह पावन पवित्र स्थान है जहां उनके जागत-ज्योति दस गुरु साहिबान के पावन आत्मिक स्वरूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब सुशोभित होते हैं, जो कि उनको हर रोज़ हुकमनामे के रूप में जीवन-क्षेत्र में जूझने के लिए अगुआई बख्शिश करते हैं। सिक्ख अपने गुरु के हुक्म अनुसार जीवन-यापन करके ही खुद को सुखी एवं संतुष्ट महसूस करता है। गुरु के दर पर हाज़िर हुए बिना प्रत्येक गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख खुद को अधूरा एवं एकाकी प्रतीत करता है। अपना धार्मिक स्थान प्रत्येक धार्मिक मत के धारक को प्राकृतिक रूप से प्यारा लगता है परंतु सिक्ख संगत को तो अपने गुरुद्वारा साहिबान जान से भी प्यारे हैं। इस हकीकत की पुष्टि हर वक्त होती रही है। बाबा दीप सिंघ जी तथा उनके साथियों द्वारा श्री हरिमंदर साहिब के अपमान को सुनकर इसका सम्मान बहाल करने के लिए अपना जीवन वार देना तथा स. महिताब सिंघ एवं स. सुक्खा सिंघ द्वारा श्री हरिमंदर साहिब का अपमान करने वाले मस्से रंगड़ को राजस्थान से आकर सोधणा (मारना) प्रमुख उदाहरणें हैं और भी अनेक उदाहरण हैं।

अफसोसजनक पहलू यह है कि प्रत्येक सरकार राजसी सत्ता तथा ताकत की खुमारी में गुरुद्वारों के लिए जानें वार देने वाली सिक्ख मानसिकता को दरकिनार कर सिक्खों के गुरुद्वारों पर बहाने से या झूठे आरोप लगा कर बल प्रयोग करने से पीछे नहीं रहती। राजतंत्री सरकारों या एलानी कट्टर मज़हबी नीति की धारक सरकारों ने तो ऐसा करना ही था परंतु घोर दुखदायक तथ्य यह है कि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश होने का दावा करने और दम भरने वाली स्वतंत्र भारत की केन्द्रीय सरकार भी इससे पीछे नहीं रही। १९८४ ई. से पहले कुछ वर्षों से बहुत ही चालाकी तथा चुस्ती से हालात को मनमर्जी के मोड़ दिये तथा सिक्ख कौम के परम पावन केन्द्रीय स्थान श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर तथा इसके साथ समूह पंजाब में ४० के लगभग अन्य गुरुद्वारा साहिबान को एक ही समय में फौजी हमले का शिकार बनाकर कत्लोगारत के इरादे से अपनी घोर करतूतों तथा कृतघ्नता का दिखावा किया। अठारहवीं सदी के मुगल हाकिमों तथा अफ़गान हमलावरों द्वारा घटित घल्लूघारों की ही तर्ज पर सिक्ख कौम का सर्वनाश या नसलघात करने के अति मंद इरादों को इस सामूहिक फौजी हमले द्वारा मूर्तिमान किया गया। इस हमले का सत्य कई कारणों के कारण एकदम पूरी दुनिया के आगे ज़ाहिर नहीं हो सका, धीरे-धीरे ज़ाहिर हो

**मुख्य संपादक। फोन : ९८१४८-९८२२३*

रहा है।

हाकिमों की सोची-समझी सोच के तहत कथित नीला तारा तथा इसके साथ जुड़ी फौजी कार्यवाही के लिए ज्यादा से ज्यादा सिक्खी स्वरूप वाले जरनैलों की सेवाएं हासिल की गईं, दुनिया को यह जताने के लिए कि उनके मन में सिक्खों के प्रति कोई बुरी भावना नहीं है तथा सिक्खों का बड़ा हिस्सा उनकी इस कार्यवाही के पक्ष में है। २ जून, १९८४ ई. तक भारतीय फौज ने जम्मू-कश्मीर से लेकर श्री गंगानगर तक अंतर्राष्ट्रीय सरहद को लगभग पूरी तरह से सील कर दिया था। सारे पंजाब के गांवों-शहरों में फौज की लगभग ७ डिवीज़नें तैनात कर दी थीं तथा फौजियों को पहले ही चयनित जगह पर पोज़ीशनें लेने के लिए कह दिया गया था।

समूची लड़ाई की निरंतर जानकारी रखने के लिए एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया था जिसकी समूची कमांड कथित तौर पर उस समय के बड़े राजसी नेता के पुत्र के हाथ में थी। अरुण नेहरू, जो कपूरथला रियासत के एक पुराने रजवाड़े खानदान की संतान है, क्रियाशील था और उप रक्षा मन्त्री के. पी. सिंघ दिओ उसकी सहायता कर रहा था।

जनरल गौरी शंकर को पंजाब के राज्यपाल का सुरक्षा सलाहकार नियुक्त किया गया। लेफ्टिनेंट जनरल कृष्णा स्वामी सुंदरजी को फौजी हमले का समूचा चार्ज सौंपा गया। लेफ्टिनेंट जनरल रणजीत सिंघ दियाल को उसका सहायक लगाया गया था। ज़िक्रयोग्य है कि आर. एस. दियाल कथित तौर पर निरंकारी मंडल का पैरोकार था।

लेफ्टिनेंट जनरल रणजीत सिंघ दियाल को समूची कार्यवाही का मुख्य संचालक बनाया गया तथा पंजाब के गवर्नर का मुख्य सलाहकार नियुक्त किया गया।

श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिबः मेजर जनरल कुलदीप सिंघ (बराड़) को श्री दरबार साहिब पर हमले की अगुआई करने का जिम्मा सौंपा गया था। फौज की पांच पलटनों— पहली, दूसरी, दसवीं, ग्यारहवीं तथा पंद्रहवीं को श्री दरबार साहिब समूह पर हमले के लिए तैनात किया गया। ये दसते फौज के बढ़िया लड़ाकू दलों से चुने गए थे। इसके अलावा सिखलाई प्राप्त कमांडो की दो बटालियन थीं जिन्होंने गहरे लाल रंग की वर्दी पहनी हुई थी, सिर पर गहरे काले रंग के लोह टोप पहने हुए थे, ताकि रात के अंधेरे में नज़र न आएं। सभी कमांडोज़ ने बुलेट प्रूफ जैकिट पहनी हुई थी। १९८४ ई. के फौजी हमले में श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब पर ५०० गोलियों के निशान लगे जिनमें से ३८० गोलियों के निशान सोने के पतरों पर लगे थे। केवल श्री हरिमंदर साहिब की इमारत के नुकसान का अंदाज़ा १०,००,००० रुपए लगाया गया।

मेजर जनरल जे. एस. (जसवाल) को श्री अमृतसर, बटाला तथा गुरदासपुर में फौजी कार्यवाही का चार्ज संभाला गया था।

श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के चारों तरफ अर्द्ध-सैनिक सुरक्षा बलों तथा फौजी दलों ने काफी समय पहले घेराबंदी करनी शुरू कर दी थी

तथा हर आने-जाने वाले यात्री की तलाशी ली जाती थी। सीआरपीएफ के सिपाहियों द्वारा बिना कारण तंग-परेशान भी किया जाता था। संगत श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी पर्व मनाने के लिए इकट्ठा हो रही थी। १ जून, १९८४ ई. को पूरे पंजाब में एक ही समय पर कर्फ्यू लगा दिया गया तथा १२: ४० पर श्री दरबार साहिब की तरफ गोलाबारी शुरू कर दी गयी। इस गोलाबारी से कई यात्री शहीद हो चुके थे। यह गोलाबारी देर रात तक चलती रही। फौज की इस कार्यवाही की शिकायत करने के लिए जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, स. अबिनाशी सिंघ, सचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, स. (संत) हरचंद सिंघ लौंगोवाल, अध्यक्ष, शिरोमणि अकाली दल द्वारा गवर्नर पंजाब तथा भारत के राष्ट्रपति से टेलीफोन पर बात करने की कोशिश की गयी परंतु फौज द्वारा टेलीफोन लाइनें बंद कर दी गयी थीं तथा किसी के साथ भी तालमेल नहीं हो सका। २ जून को और फौज आ गयी तथा गोलाबारी होती रही। ३ जून को श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी पर्व था। फौज द्वारा सुबह ६ बजे से १० बजे तक कर्फ्यू में ढील दी गई, जिस कारण बहुत सारी संगत श्री दरबार साहिब पहुंच गयी। अचानक ही सख़्ती करते हुए फौज द्वारा कर्फ्यू लगा दिया गया जिसके कारण श्री दरबार साहिब के दर्शन-स्नान करने आए श्रद्धालु अंदर ही रहने के लिए मजबूर हो गए। ३ जून को अचानक सारा पंजाब फौज के हवाले कर दिया गया तथा फौजियों को खुली छूट दे दी गयी कि वे किसी को भी जान से मार सकते हैं। फौज ने सारे पंजाब की आवाजाही पर पाबंदी लगा दी। श्री अमृतसर की टेलीफोन एवं बिजली-सेवा बंद कर दी गयी ताकि श्री अमृतसर के बारे में दुनिया को कुछ भी पता न चले। ४ जून को फिर फौज की तरफ से श्री हरिमंदर साहिब कांप्लेक्स पर चारों तरफ से गोलाबारी हो रही थी। स. तेजा सिंघ समुंदरी हाल पर बुरी तरह से गोलियों की बौछाड़ की जा रही थी। ५ जून को गोलाबारी और तेज हो गयी। आए यात्रियों के लिए लंगर-पानी का कोई प्रबंध नहीं हो सका। श्री गुरु रामदास सराय के अंदर पानी वाली टंकी को फौज ने बम मारकर उड़ा दिया था। गोलाबारी और तेज होती जा रही थी। फौज घंटाघर वाली दिशा से जूतों सहित श्री दरबार साहिब के अंदर दाखिल हो गयी। श्री गुरु रामदास सराय वाली दिशा से गेट तोड़कर फौज तोपों-टैंकों से लैस होकर अंदर दाखिल हो गयी।

श्री अकाल तख्त साहिब, श्री अमृतसर : ५ जून को श्री अकाल तख्त साहिब पर तोपों तथा टैंकों से हमला कर दिया गया। श्री अकाल तख्त साहिब की इमारत आग की लपटों की लपेट में आ चुकी थी। फौज द्वारा गिरफ्तार किए गए यात्रियों के धार्मिक चिन्ह 'कृपाणें' उतारकर नालियों में फेंकी गईं। अगर कोई पानी मांगता तो उसे राइफल के बट से पीटा जाता। फौज द्वारा बच्चों व बुजुर्गों का भी लिहाज़ नहीं किया जाता था। एक छोटा-सा बच्चा, जिसकी मां गोली लगने के कारण मर गयी, वह मां! मां! कहता रो रहा था। एक फौजी ने उसको उसकी मरी हुई मां की लाश पर लिटाकर

उस पर गोलियों की बौछाड़ कर दी। चारों तरफ जहां तक नज़र जाती थी, लाशें ही लाशें नज़र आती थीं। कमरों में से खून बहकर बरामदों तक आ रहा था। फौज वाले कमरों में बाहर से गरनेड फेंक रहे थे तथा दिल दहलाने वाला चीत्कार चारों तरफ सुनाई दे रहा था। बाद में इन कमरों में से लाशें उठाकर बिना किसी को बताए फौज की निगरानी तले अंतिम संस्कार कर दिया गया।

इस फौजी हमले के दौरान श्री दरबार साहिब कांप्लेक्स में स्थित पावन स्थान श्री अकाल तख्त साहिब का २ करोड़, श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब का १० लाख, दर्शनी ड्योढ़ी का २० लाख, तोशेखाने में पड़ी वस्तुओं का २०० करोड़, सिक्ख रेफ्रेंस लाइब्रेरी का ५० लाख, केन्द्रीय सिक्ख संग्रहालय का १० लाख, परिक्रमा का २ करोड़, श्री गुरु रामदास लंगर हाल का १५ लाख, अकाल रैस्ट हाऊस का १० लाख, श्री गुरु रामदास सराय का १० करोड़, स. तेजा सिंघ समुंदरी हाल का ५० करोड़, श्री गुरु नानक निवास का २० करोड़, बारांदरी की इमारत का ५० लाख, गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब दीवान हाल का २५ लाख रुपए का अंदाज़न नुकसान होने का विवरण इकट्ठा किया गया।

गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी : गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी की नौ-मंज़िला सुंदर इमारत गुरुद्वारा बीबी कौलां जी के पास स्थित है। यह स्थान छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साहिबज़ादा बाबा अटल राय जी की याद में सुशोभित है। जून, १९८४ ई. में हुए हमले के दौरान इस गुरुद्वारा साहिब पर भी फौज की गोलियों तथा बमों से लगी आग से अंदाज़न ५ करोड़ का नुकसान हुआ। इस गुरुद्वारा साहिब से लगते रिहायशी क्वार्टरों में भी फौज द्वारा जमकर लूटमार की गयी तथा गोलियों-बमों से नुकसान पहुंचाया गया। इसका अंदाज़ा माहिरों द्वारा अंदाज़न ५० लाख रुपए लगाया गया है। इन गुरुद्वारों के साथ लगते दो पावन सरोवरों की भी भारी तोड़-फोड़ की गयी जिससे लगभग २ करोड़ का नुकसान होने का अंदाज़ा लगाया गया।

बुंगा रामगढ़िया : श्री दरबार साहिब कांप्लेक्स में मिसलों के समय की सुंदर इमारत बुंगा रामगढ़िया सुशोभित है। इस इमारत के ऊंचे बुर्ज दूर से ही दीख पड़ते हैं। इन बुर्जों पर फौज का कहर जमकर टूटा तथा ऐतिहासिक बुंगा तहसनहस कर दिया गया। इस पर लगे गोलियों व गोलों के निशान अपनी कहानी बयान करते हैं। इस ऐतिहासिक इमारत का ५० लाख रुपए का अंदाज़न नुकसान रिकार्ड किया गया। सिंधियों के बुंगे का २० लाख रुपए का अंदाज़न नुकसान हुआ।

शहीद मार्किट की दुकानों पर, श्री दरबार साहिब तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुलाज़िमों के ६७ रिहायशी क्वार्टरों पर भी फौज ने तलाशी लेने के बहाने तोड़-फोड़ एवं लूटमार की। इसके नुकसान का अंदाज़ा लगभग ४० लाख रुपए रिकार्ड किया गया।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुख्य कार्यालय की फौज ने बहुत बुरी तरह से तोड़-फोड़ की। कोई भी वस्तु ऐसी नहीं छोड़ी जो दोबारा काम आ

सके। कार्यालय में पड़ी लाखों रुपए की स्टेशनरी, फर्नीचर एवं धर्म प्रचार कमेटी की गाड़ियों को आग लगाकर जला दिया गया। इस नुकसान की अंदाज़न कीमत १ करोड़ ३७ लाख रुपए रिकार्ड की गयी।

श्री दरबार साहिब, तरनतारन : पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने दिल्ली-लाहौर शाह रोड पर तरनतारन शहर की स्थापना की तथा श्री दरबार साहिब एवं पावन सरोवर का निर्माण करवाया। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने राज्य-काल के दौरान श्री दरबार साहिब, तरनतारन की ऐतिहासिक इमारत को नया रूप देकर सुंदर मीनाकारी करवाई। श्री दरबार साहिब, तरनतारन श्री अमृतसर शहर से २४ किलोमीटर दूर स्थित प्रमुख धार्मिक केन्द्र है। १६ जून, १९८४ ई. रात ८:३० पर गुरुद्वारा साहिब को चारों तरफ से घेरा डाल लिया। गुरुद्वारा साहिब के मुख्य गेट वाली दिशा से फौज ने स्पीकर द्वारा अनाऊंसमेंट करनी शुरू कर दी कि जो भी कोई गुरुद्वारा साहिब के अंदर है वह हाथ खड़े करके बाहर आ जाए। गुरुद्वारा साहिब से सारी संगत हाथ खड़े करके बाहर आ गयी। केवल शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुलाज़िम व कुछ कार सेवा वाले सेवादार ही अंदर रह गए। उस समय गुरुद्वारा साहिब के मैनेज़र स. गुरदीप सिंघ भी गुरुद्वारा साहिब में मौजूद थे। रात को किसी को भी बाहर से अंदर और अंदर से बाहर नहीं आने दिया। अमृत वेले मैनेजर साहिब ने गुरुद्वारा साहिब की सफाई की सेवा सेवादारों से करवाकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश किया। फौज ने १७ जून को सुबह अमृत वेले चार बजे लोगों में दहशत फैलाने के लिए पहली गोली चलाई जिससे सेवादार भाई दरशन सिंघ बाल-बाल बचा। इसके बाद चारों तरफ से कई गोलियां फौज ने चलाईं। इस गोलाबारी के दौरान ही मीनार के पास एक व्यक्ति को गोली लगी जो मौके पर ही दम तोड़ गया। १८ जून को फौज ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के डेढ़ दर्जन के लगभग सेवादारों को गिरफ्तार कर उनकी बुरी तरह से मारपीट की। उन सबके बाजू पीछे बांधकर उन्हें कई घंटे बैठाए रखा और फौज वाले उनको गंदी गालियां निकालकर बेइज्जत करते रहे। बाद में फौज उनको मिलेट्री कैंप में ले गयी। इनमें से कई सेवादार कई-कई महीने की जेल काटकर रिहा हुए।

फौज का घेरा लगभग चार दिन तक रहा। फौज ने सारे गुरुद्वारा साहिब की तलाशी ली किंतु उनको कोई संदिग्ध वस्तु न मिली। फौज का मंतव्य तो केवल सिक्खों के धार्मिक स्थानों का अपमान करना व उनकी भावनाओं से खिलवाड़ करना था।

गुरुद्वारा जन्म स्थान बाबा बुड्ढा जी, कत्थूनंगल: यह गुरुद्वारा साहिब श्री अमृतसर से १८ किलोमीटर की दूरी पर बटाला रोड पर गांव कत्थूनंगल में मौजूद है। इस गुरुद्वारा साहिब का निर्माण कार-सेवा द्वारा बाबा प्रेम सिंघ ने कई वर्षों की मेहनत तथा संगत के सहयोग से बाबा बुड्ढा जी की याद में बड़ी श्रद्धा-भावना से करवाया था। जून १९८४ ई. में फौज श्री अकाल तख्त साहिब के हमले से निपटकर लोगों को डराने के लिए नये

ढंग-तरीके अपना रही थी कि लोग फौज द्वारा किए ज़ुल्म के खिलाफ एकजुट न हो जाएं। जून, १९८४ ई. में फौज ने अचानक सुबह गुरुद्वारा जन्म-स्थान बाबा बुड्ढा जी को घेरकर चारों ओर टैंक व तोपें लगा दीं। ऐसे लग रहा था जैसे फौज गुरुद्वारा साहिब की पूरी इमारत को तहस-नहस कर देगी। चारों ओर दहशत का माहौल था। फौजी अफसर व फौज जूतों समेत गुरुद्वारा साहिब के अंदर दाखिल होकर शोर मचा रही थी। फौज बाबा प्रेम सिंघ को गुरुद्वारा साहिब में आतंकवादी छिपे होने के बारे में कहकर धमकाने लगी। बाबा जी ने बड़ी नम्रता के साथ फौज के अधिकारियों को बताया कि गुरुद्वारा साहिब में मौजूद नौजवान सेवादार हैं। इनमें से कोई भी खाड़कू नहीं है। फौज ने बाबा जी की कोई बात न सुनी और अपनी मनमर्जी से सारे गुरुद्वारा साहिब के अंदर तलाशी लेने लग गयी। जब कोई एतराजयोग्य वस्तु न मिली तो शाम को फौज को खाली हाथ वापिस आना पड़ा। फौज द्वारा जूतों समेत अन्य कई ढंगों से गुरु-घर के किये गये अपमान से संगत की भावनाओं को गहरी ठेस पहुंची तथा उनके हृदय छलनी हो गए।

गुरुद्वारा बाउली साहिब, गोइंदवाल साहिब : ६ जून, १९८४ बुधवार वाले दिन सुबह ९ बजे के लगभग गुरुद्वारा साहिब के मैनेजर स. बली सिंघ अपने नित्यक्रम के अनुसार जब कार्यालय पहुंचे तो वहां सात-आठ व्यक्ति— स. बलबीर सिंघ, डॉ. लाभ सिंघ, भाई रणजीत सिंघ आदि उप प्रबंधक स. गुरदिआल सिंघ के पास बैठे हुए थे जो रात को श्री अमृतसर से आ रही बम-धमाकों की अवाज़ तथा कर्फ्यू के बारे में बातें कर चिंताग्रस्त हो रहे थे तो उसी समय अचानक दर्शनी ड्योढ़ी की तरफ से फौज की गाड़ियों की आवाज़ आनी शुरू हो गयी। देखते ही देखते फौज ने गुरुद्वारा साहिब को चारों तरफ से घेरकर राईफलें तान लीं। चारों तरफ माहौल दहशतज़दा हो गया। फौजियों ने गुरुद्वारा साहिब को निशाना बनाकर लाइट मशीनगनें तान ली। मैनेजर साहिब कार्यालय से बाहर आकर फौज के कमांडर के पास गए तो फौजी कमांडर ने गुरुद्वारा साहिब में घुसपैठिए छिपे होने की बात करते हुए गुरुद्वारा साहिब की तलाशी लेने के बारे में कहा। मैनेजर साहिब ने गुरुद्वारा साहिब के अंदर किसी भी तरह के एतराजयोग्य व्यक्ति होने से इंकार किया किंतु फिर भी फौज ने बड़े ही क्रूर ढंग से गुरुद्वारा साहिब की तलाशी ली। इस दौरान गुरुद्वारा साहिब की मर्यादा में विघ्न पड़ा जिससे सिक्ख संगत की भावनायों को गहरी चोट पहुंची।

तख्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो (बठिंडा) : दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब के घेरे से निकलकर रास्ते में अनेक मुसीबतों का मुकाबला करते हुए जनवरी, १७०६ ई. में तलवंडी साबो की धरती को अपने चरणों से निवाजा। इस पावन स्थान पर गुरु जी ने भाई मनी सिंघ जी से श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी दर्ज करवाकर संपूर्णता प्रदान की। इस पावन ऐतिहासिक स्थान को सिक्खी का पांचवां तख्त होने का गौरव

हासिल है। जून, १९८४ ई. में यहां भी फौज द्वारा घोर अपमान किया गया।

गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब, जींद : जींद सिक्खों की प्रसिद्ध रियासत का प्रधान शहर रहा है। इस शहर को पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी व नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की पावन चरण-स्पर्श प्राप्त है। उनकी याद में पावन स्थान सुशोभित है। जून, १९८४ ई. में फौजी हमले के दौरान यह स्थान भी फौजी कहर से बच नहीं सका।

गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब, धमतानः धमतान पंजाब के संगरूर ज़िले की हद के साथ लगते हरियाणा प्रांत का गांव है। इस गांव की उत्तर दिशा की ओर श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की चरण-स्पर्श प्राप्त स्थान गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब सुशोभित है। गुरु साहिब बांगर से आगरा को जाते समय इस स्थान पर ठहरे थे। यहां के निवासी दग्गो ज़मींदार ने गुरु जी की श्रद्धा-भावना से सेवा की थी। इस स्थान पर गुरु जी ने भाई मीहां जी को नगाड़ा, निशान तथा लंगर चलाने के लिए लोह (तवी) की बख्शिश की थी जिससे 'मीहांशाही संप्रदाय' चली थी।

महाराजा करम सिंघ ने गुरु जी की आमद की याद में गुरुद्वारा साहिब की इमारत तैयार करवाई। यहां जून, १९८४ में फौज ने घेराबंदी करके गुरु-घर की तलाशी ली और कीमती सामान साथ ले गयी।

गुरुद्वारा श्री नानकिआणा साहिब, संगरूर : श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की पावन-चरण स्पर्श प्राप्त स्थान गुरुद्वारा श्री नानकिआणा साहिब मालवा के प्रसिद्ध शहर संगरूर के साथ लगते गांव में सुशोभित है। श्री गुरु नानक देव जी पूरब की प्रचार-यात्रा के समय यहां आए थे और भाई मरदाना जी उनके साथ थे।

छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी अकोई साहिब से यहां आए थे। श्री गुरु नानक देव जी की याद में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने एक थड़े का निर्माण करवाया। बाद में राजा रघुबीर सिंघ ने गुरुद्वारा साहिब की नयी इमारत बनवाई। जून, १९८४ ई. में गुरुद्वारा साहिब की इमारत को घेरा डालकर भीतर काम करते सभी मुलाज़िमों को बंदी बना लिया गया, जिनको बाद में रिहा किया गया।

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, श्री मुकतसर साहिब : गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, श्री मुकतसर साहिब दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पावन चरण-स्पर्श प्राप्त वह स्थान है जहां गुरु साहिब ने पीछा कर रही मुगल फौज का डटकर मुकाबला किया था। इस युद्ध के दौरान श्री अनंदपुर साहिब से बेदावा देकर चले आए सिंघों ने मुगल फौज का डटकर मुकाबला कर शहीदी प्राप्त की तथा गुरु साहिब से मुक्त होने का आशीर्वाद प्राप्त किया था। ३ जून, १९८४ ई. को भारतीय फौज ने इस गुरुद्वारा साहिब को चारों ओर से घेरा डालकर गोलाबारी की। इस दिन पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी दिवस था और कर्फ्यू में छूट मिलने के कारण संगत गुरु

जी का शहीदी दिवस मनाने के लिए गुरुद्वारा साहिब में इकट्ठा होना शुरू हुई थी। संगत के अलावा गुरुद्वारा साहिब में ड्यूटी पर तैनात कर्मचारी तथा गुरुद्वारा साहिब की हदूद के अंदर रहते मुख्य ग्रंथी व अन्य कर्मचारी-परिवार भी थे। गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब फौजी कार्यवाही का मुख्य केंद्र था। सारे गुरुद्वारा साहिब के गिर्द एक ऊंची दीवार बनी हुई थी, जिसमें आठ दरवाज़े संगत के अंदर-बाहर जाने के लिए बने हुए हैं।

४ जून को फौज ने गुरुद्वारा साहिब पर हमला कर दिया। तीन बजे के लगभग लाऊड स्पीकर में फौज द्वारा सूचना दी गई कि जो भी कोई गुरुद्वारा साहिब की इमारत में मौजूद है वह बाहर आ जाए नहीं तो सामने आते ही गोली मार दी जाएगी। पौने चार बजे के लगभग चार नंबर गेट से गुरुद्वारा तंबू साहिब की तरफ सरोवर के दूसरी तरफ गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब की दिशा में तोप के गोले चलने शुरू हो गए। एक गोला अटारी में लगा जिससे चारों तरफ आग ही आग फैल गई और अटारी गिर गई। बारांदरी तथा गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब में भी गोले लगने शुरू हो गए। निशान साहिब को सहारा देने के लिए बनाई गई अटारी बमबारी से ढह-ढेरी हो गई। एक-दो गोले ऐतिहासिक वट वृक्ष में भी लगे जिससे वह धरती पर गिर गया। गोलों की आग इतनी तेज थी कि लोहे के मोटे गाडर भी पिघल गए। गुरुद्वारा साहिब में मौजूद यात्री अंदर ही फंसे रह गए।

गुरुद्वारा साहिब में मौजूद रिहायशी क्वार्टरों में से मुलाज़िमों के परिवार दीवार फांदकर बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे कि फौज ने उनको दबोच लिया। मुख्य ग्रंथी ज्ञानी गुरबचन सिंघ की तरफ फौज द्वारा एक ब्रस्ट मारा गया जिससे उनके पीछे पटवारी धरम सिंघ के घर में खड़ी भैंस मर गई। उस समय ही एक दर्जी गुल्लू, जो अपने घर के आगे खड़ा था, फौजियों की गोलियों का शिकार हो गया। उसका अंतिम संस्कार सुबह गुरुद्वारा तंबू साहिब के पीछे निहंग सिंघों के डेरे में किया गया। जब फौज ने गुरुद्वारा साहिब के इर्द-गिर्द हमला किया तो किसी ने एक देसी बम उन पर फेंक दिया जिससे फौज का एक जवान मारा गया और एक जख्मी हो गया। एक नौजवान ने मारे गए फौजी की सटेनगन जा उठाई। फौज ने उसको वहीं गोलियों से भून दिया। सूर्योदय तक गोलीबारी बंद हो गई। जो श्रद्धालु अंदर पकड़े गए उनके कपड़े उतरवाकर दोपहर के समय तपते फर्श पर लिटाया गया तथा कई प्रकार की यातनायें दी गयीं। इस समय गांव मौजेवाल का एक साठ वर्षीय बुजुर्ग स. गुरदीप सिंघ गुरुपर्व अवसर पर आया हुआ था। उसने बाजू में एक थैला लटकाया हुआ था। फौजियों ने उसे हाथ ऊपर कर आने का इशारा किया। उस बुजुर्ग को पहले तो समझ न आया पर जब समझ आया तो वो हाथ ऊपर करने लगा। इतने में उसका थैला नीचे गिरने लगा। उसने थैले को गिरने से बचाने के लिए दूसरे हाथ से थैले को थामना चाहा तो फौजियों ने समझा कि वह बम फेंकने लगा है। उस पर ब्रस्ट मारकर उसका सर उड़ा दिया। इसी तरह एक और निहंग सिंघ को गोलियां मारकर मार दिया गया।

फौज ने चार सौ के लगभग आदमियों में से ६२ आदमियों को अलग कर लिया जिनको रात होने से पहले एजूकेशन कॉलेज में ले जाकर बंद कर दिया गया। इनमें या तो गुरुद्वारा साहिब के कर्मचारी थे या फिर दर्शन करने आए श्रद्धालु। इनमें से सबसे बड़ी उम्र का ७० वर्षीय का बुजुर्ग लाल सिंघ था और सबसे छोटी उम्र का १२ वर्ष का बच्चा गुरपाल सिंघ था। इस घटना में गुरुद्वारा साहिब का स्टोर कीपर स. बलदेव सिंघ परिक्रमा में ही प्यास न सहन करता हुआ शहीद हो गया।

इस फौजी हमले के दौरान सरब लोह का ऐतिहासिक निशान साहिब, जिसको महाराजा नाभा ने अपने घर पुत्र हीरा सिंघ का जन्म होने की खुशी में इंग्लैंड से मंगवाकर सुशोभित किया था उन दिनों उस पर ७०,००० रुपए खर्च आया था तथा इसको खड़ा करने के लिए एक बहुमंज़िला अटारी बनाई गई थी, इस अटारी के साथ मोटे लोहे के सरीए डालकर निशान साहिब को सहारा दिया गया था,

गुरुद्वारा साहिब बीबी काहन कौर, मोगा : मेजर जनरल शमशेर सिंघ को तरनतारन, पट्टी, लुधियाना, फिरोज़पुर तथा जीरा का चार्ज सौंपा गया था। २० अप्रैल, १९८४ ई. से २६ अप्रैल, १९८४ ई. तक मोगा में तीन गुरुद्वारों को घेरा डालकर सारे शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया। २६ अप्रैल को गुरुद्वारा साहिब बीबी काहन कौर, मोगा, जो रेलवे फाटक के पास सुशोभित है, पर ५.०५ बजे फौज द्वारा भारी बमबारी की गई, जिसके परिणामस्वरूप ८ सिंघ शहीद हो गए। एक सिंघ, जो आंखों से देख नहीं सकता था, गुरुद्वारा सिंघ सभा में शहीद हुआ। २६ अप्रैल को गुरुद्वारा साहिब बीबी काहन कौर, मोगा के चारों और कर्फ्यू लगा दिया गया जो ३० अप्रैल तक जारी रहा। गुरुद्वारा साहिब के लंगर में से राशन खत्म हो गया। गुरुद्वारा साहिब में जो संगत थी उसका भूख के कारण बुरा हाल होने लगा। मोगा की बीबी करतार कौर ७० महिलाओं को साथ लेकर गुरुद्वारा साहिब में लंगर पहुंचाने गई तो फौज ने उनको घेर लिया और आगे नहीं जाने दिया। बीबी करतार कौर ने धरना लगा दिया। शहर के एस. डी. एम. ने फौज वालों और महिलाओं को समझाकर फैसला करवाकर गुरुद्वारा साहिब में लंगर पहुंचाया तथा कर्फ्यू खत्म करवाया।

१ जून, १९८४ ई. को गुरुद्वारा साहिब को फिर घेरा डाला गया और पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के शहीदी पर्व पर नगर कीर्तन न निकालने दिया। गुरुद्वारा साहिब का बिजली-पानी बंद कर दिया गया तथा फौज द्वारा गुरुद्वारा साहिब पर गोलाबारी शुरू कर दी गयी। इस हमले में गांव अजीतवाल का सरपंच स. अमरजीत सिंघ, धर्मकोट का बिट्टू और महेशरी गांव के कुछ सिंघ शहीद हो गए।

गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब, पटियाला: जनरल गुरदिआल सिंघ को पटियाला, संगरूर, बठिंडा, रोपड़ तथा फरीदकोट का चार्ज दिया गया था। इसके साथ तैनात ब्रिगेडियर हरपाल सिंघ चौधरी, लेफ्टिनेंट कर्नल नंद कुमार गुप्ता, मेजर जे. एस. कथूरिया, कैप्टन अमरजीत सिंघ (संधू)

तथा एक अन्य कैप्टन (रंधावा) ने पटियाला के गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब पर हुए खूनी हमले की अगुआई की।

गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब, पटियाला नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की पावन चरण-स्पर्श प्राप्त पावन स्थान है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब कश्मीरी पंडितों की विनती पर शहादत देने के लिए दिल्ली को जाते समय नवाब सैफ खान की विनती पर यहां पहुंचे थे। गुरुद्वारा साहिब श्री दूख निवारण साहिब सन् १९३० ई. में अस्तित्व में आया परंतु श्रद्धालु बहुत देर पहले से ही इस स्थान को नतमस्तक होकर खुद को भाग्यवान महसूस करते आ रहे थे। जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी इस स्थान पर पहुंचे थे, उस समय पटियाला इस रूप में नहीं था। फूलकिया स्टेट्स गजटीयर १९०४ ई. के अनुसार पटियाला फूलकिया रियासत में से एक है। सन् १७६२ ई. में यह वास्तविक रूप धारण कर गया था परंतु इसके अस्तित्व को १७६४ ई. से मानना अधिक उचित होगा जब सिक्खों ने सरहिंद के किले पर कब्ज़ा कर लिया था तथा अपने-अपने इलाकों का बटवारा कर लिया था। गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब, पटियाला शहर में पटियाला-सरहिंद मार्ग पर स्थित है। स्थानीय रिवायत के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी सन् १६७५ ई. में दूसरी बार यहां विराजमान हुए थे जब वे सैफ़ाबाद के किले में ठहरे थे, जिसको उनके नाम पर बहादरगढ़ कहा जाता है। गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब वाले स्थान पर एक टोभा तथा वट (बोहड़) के वृक्ष दिखाई देते थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के इस स्थान पर आने के समय यह स्थान गांव लहिल की सीमा में पड़ता था। इस पावन स्थान पर गुरु जी वट वृक्ष के नीचे विराजमान हुए थे। इस गुरुद्वारा साहिब में हर वर्ष माघ सुदी पंचमी को बसंत के मेले का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। हर महीने की पंचमी को संगत यहां पावन सरोवर में स्नान करने के लिए आती है।

जून, १९८४ ई. में पंचमी वाले दिन स्नान करने के लिए गांवों-शहरों से संगत आई हुई थी। कुछ समय बाद ही शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया। सारा पटियाला शहर फौज द्वारा सील कर दिया गया। रात को गुरुद्वारा साहिब के मुख्य ग्रंथी ने सारी संगत को फौज द्वारा किए गए एलान से अवगत करवाया कि कोई भी इधर-उधर नहीं जा सकता तथा गुरुद्वारा साहिब से बाहर जाने वाले को गोली मार दी जाएगी। गुरुद्वारा साहिब में भारी संख्या में संगत थी। सराय में तथा सरोवर के किनारे पर कोई जगह खाली नहीं थी, हर जगह संगत आराम कर रही थी। हर एक के चेहरे पर खौफ और गुस्सा था। सुबह होने तक गुरुद्वारा साहिब में काफी संगत इकट्ठी हो चुकी थी और लंगर हॉल में भी संगत बढ़ रही थी। लंगर में दूध खत्म हो चुका था जिसके कारण छोटे बच्चों के लिए मुश्किल खड़ी हो रही थी। संगत में परेशानी बढ़ती जा रही थी।

४ जून सोमवार को रात १२ बजे के लगभग पहली गोली चली तथा उसके बाद लगातार ढाई बजे तक गोली चलती रही। फौज ने गुरुद्वारा

साहिब के पीछे की तरफ, जहां फैक्टरी-क्षेत्र है, की तरफ से दीवार फांदकर गुरुद्वारा साहिब के अंदर मोटर पंप पर कब्जा कर लिया तथा अंदर आकर बोरियों के चार अस्थाई मोर्चे कायम कर लिए। कुछ फौजी पानी की टैंकी पर चढ़कर बैठ गए तथा लंगर हाल की तरफ देखने लगे। सरोवर की दूसरी तरफ वाले क्वार्टर्ज़ को गुरुद्वारा साहिब से काट दिया गया। संगत में भगदड़ मच गयी थी। चारों ओर हाहाकार और शोरगुल मच गया था। फौज इतना शोर मचा रही थी कि किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। फौज ने एक-एक कमरे का दरवाज़ा खटकाकर अंदर रहते मुलाज़िमों तथा उनके परिवारों के हर सदस्य, यहां तक कि औरतों, बच्चों को भी घसीट-घसीटकर बाहर निकाल लिया। फौज ने एक हज़ार फौजियों के साथ सारे गुरुद्वारा साहिब पर कब्जा कर लिया था। फौज ने सारी संगत में से नौजवानों को अलग कर लिया। उन्हें संगत के सामने ही बटों तथा बंदूकों से पीटा गया और किसी अनजान जगह पर भेज दिया गया। शेष संगत को वहीं बैठे रहने के लिए कहा गया। किसी को पेशाब तक करने नहीं जाने दिया। मिलेट्री वाले हरेक से पूछते, ''वो कमरा कहां है जिसका कोई दरवाज़ा नहीं? वो सुरंग बताओ जिसके रास्ते गंदा लोक आता है।'' इस समय गुरुद्वारा साहिब के मैनेजर स. अजैब सिंघ ने उठकर टूटी-फूटी हिंदी में बताने की कोशिश की कि ''इनमें से बहुत सारे शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुलाज़िम हैं तथा शेष दूर-नज़दीक गांवों से पंचमी मनाने के लिए आई संगत है। इनमें से कोई भी खाड़कू नहीं है। मुलाज़िमों के कमरों में से जो हथियार पकड़े गए हैं वो खज़ाने की रक्षा के लिए हैं और हर एक हथियार का लाइसेंस है।'' मैनेजर साहिब अभी बता ही रहे थे कि फौज का एक सरदार ब्रिगेडियर आ गया। उसने मैनेजर साहिब से पूछा कि कौन-कौन और कहां कहां है? उसने गारद साथ भेजकर निवासों की तरफ भेज दिया और कहा कि दिखाएं कि कौन-कौन मारा गया है और साथ ही निवासों की तलाशी लें। मिलेट्री वाले मैनेजर के साथ कारबाईने तानकर चल पड़े। गोलियों द्वारा मारे गए लोगों की लाशें जगह-जगह टेढ़ी-मेढ़ी पड़ी थीं। इनमें से दो लाशें गुरुद्वारा साहिब के अस्थाई मुलाज़िमों स. सागर सिंघ तथा स. जगजीत सिंघ की थीं। एक भिखारी, एक सूरमा सिंघ, तीन बुजुर्ग औरतों की लाशें भी पड़ी थीं। फौज द्वारा अपने पास नोट किए कमरा नंबर ४८, ४९ तथा ६३ की पूरी तरह से तलाशी लेने के बाद वहां से जो कागज़-पत्र मिले, बांधकर एक तरफ रख दिए गए तथा मृतकों का विवरण तैयार किया गया। यह सिलसिला शाम के ४ बजे तक चलता रहा। इसके बाद फौज वाले मैनेजर साहिब को श्री दरबार साहिब की तरफ ले गए। गुरुद्वारा साहिब में स्थित पीपल के पास, जहां श्री दरबार साहिब को सीढ़ियां जाती हैं। वहां चार लाशें और पड़ी थीं, जिनमें से एक लाश सरहिंद के बी. डी. ओ. के लड़के जसदेव सिंघ, एक बाबा रतन सिंघ, एक माता तथा एक अन्य बुजुर्ग सिंघ की थी। ये सारे निशान साहिब के पास फौज का ब्रस्ट लगने से शहीद हुए बताए गए। साइकिल स्टैंड में

गुरुद्वारा साहिब का सारा स्टाफ, ग्रंथी, रागी सिंघ सब रस्सियों से बुरी तरह बांधकर बैठाए गए थे। सारे सिंघों के सर नंगे और बाल खुले हुए थे।

एक सरदार ब्रिगेडियर आया। उसने मैनेजर साहिब से पूछा कि श्री दरबार साहिब कितने बजे खुलता है। मैनेजर साहिब के बताने पर कि श्री दरबार साहिब प्रतिदिन सुबह दो बजे खुलता है, किंतु अब तो पांच बज चुके हैं। उस ब्रिगेडियर ने बिना गारद के मैनेजर को बाहर भेजकर मुख्य ग्रंथी को बुलाकर गुरुद्वारा साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब प्रकाश करवाया। ब्रिगेडियर ने जिन मुलाज़िमों के पास पहचान-पत्र थे, उनको छोड़ने का हुक्म दिया।

फर्श पर जगह-जगह खून के निशान थे। मानवीय खून का गाढ़ा गारा (कीच) बन चुका था। गुरुद्वारा साहिब के रोशनदानों के शीशे टूट गए थे। दीवारों पर जगह-जगह गोलियों के निशान थे। दूसरे दिन सुबह आठ बजे सारी संगत को पंजाब पुलिस के हवाले कर दिया गया। गुरुद्वारा साहिब के बाहर सड़क पर टैंकों के भारी पहियों के निशान थे। फौज द्वारा मुलाजिमों के कमरों की तलाशी लेते समय जो कुछ भी हाथ लगा वह उठा लिया गया। मुलाज़िमों के सूटकेस बंदूकों की संगीनों से फाड़ दिए गए। फौज द्वारा उठाए गए सामान में गुरुद्वारा साहिब के खज़ाने में से लिए २१८१ रुपए, क्वार्टरों में से १६८१३ रुपए, ३१ घड़ियां, १ टाईम पीस, ३ टेप रिकार्डर, ५ ट्रांस्जिस्टर, १५ तोले सोने के गहने तथा ८ तोले चांदी के गहने थे।

गुरुद्वारा चरन कंवल साहिब, जींदोवाल (बंगा) : मेजर जनरल तरलोक सिंघ को दुआबा क्षेत्र का चार्ज दिया गया था। नवांशहर से १२ किलोमीटर जलंधर की तरफ जलंधर-चंडीगढ़ की मुख्य मार्ग पर बसा हुआ बंगा मुख्य कसबा है। इस कसबे में छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की पावन चरण-स्पर्श प्राप्त स्थान गुरुद्वारा चरन कंवल साहिब सुशोभित है। जून, १९८४ ई. में फौज ने इस स्थान को घेरा डालकर अपने कब्जे में ले लिया। यह घेरा निरंतर कई दिनों तक डाले रखा तथा गुरुद्वारा साहिब में सेवा करते रागी एवं पाठी सिंघों की मार-पिटाई करने के उपरांत उनको जेल भेजकर उन पर मुकद्दमा चलाया गया।

गुरुद्वारा भट्ठा साहिब, रोपड़ : गुरुद्वारा भट्ठा साहिब, रोपड़ दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पावन चरण-स्पर्श प्राप्त स्थान है। इस पावन स्थान पर दूर-दूर से संगत नत्मस्तक होने के लिए आती है। ३ जून को पंजाब में कर्फ्यू के दौरान सीआरपीएफ के जवान आधुनिक हथियारों से लैस व दो ट्रकों में सवार होकर आए थे। इनमें से कुछ सिपाही गुरुद्वारा साहिब की तरफ निशाना कर पुज़ीशन लेकर खड़े थे और कुछ सिपाही गुरुद्वारा साहिब के इर्द-गिर्द गश्त करने लग गए थे। गुरुद्वारा साहिब में मौजूद संगत तथा यात्रियों को गुरुद्वारा साहिब से बाहर आने से मना कर दिया गया। ४ जून, १९८४ ई. को फौज के दो हज़ार गिनती के लगभग फौजी भी वहां पहुंच गए। फौज के आते ही गुरुद्वारा साहिब की तरफ मुंह कर

मशीनगनें चारों ओर तैनात कर दीं। शाम तक फौज के टैंक भी पहुंच गए। इस समय गुरुद्वारा साहिब में ५६ के लगभग व्यक्ति थे जो कर्फ्यू के कारण यहां फंस गए थे। इनमें से १७ गुरुद्वारा साहिब के कर्मचारी थे, ५ अखंड पाठी तथा ऑल इंडिया सिक्ख स्टूडेंट्स फेडरेशन, रोपड़ का ज़िला अध्यक्ष स. सरबजीत सिंघ व अन्य यात्री थे। गुरुद्वारा साहिब की तरफ से किसी किस्म का कोई विरोध नहीं किया गया था। फौज ने ६ जून की रात तक घेरा डाले रखा। ५ जून को रात १२ बजे के लगभग गुरुद्वारा साहिब के पीछे की तरफ से बिजली घर वाली दिशा से फौज ने दीवार तोड़ी और भीतर दाखिल हो गयी। गुरुद्वारा साहिब में प्रवेश करने से पहले फौज द्वारा एक फायर भी किया गया। गोली की आवाज़ सुनकर सारी संगत श्री दरबार साहिब वाले कमरे में आ गई। इस कमरे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश था और पाठी सिंघ पाठ कर रहा था। फौज ने लंगर हाल की तरफ जाकर ललकारना शुरू कर दिया। खाड़कुओं का नाम लेकर गालियां निकालनी शुरू कर दीं और बेतहाशा गोलियां चलाना शुरू कर दीं, जिसके फलस्वरूप ६० वर्षीय बुजुर्ग स. हरनाम सिंघ को गोली लगने से उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गयी। गुरुद्वारा साहिब में एक हिंदू यात्री श्री कुलदीप कुमार भी गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गया और चंडीगढ़ के पी. जी. आई. अस्पताल में दम तोड़ गया। लंगर हॉल वाली दिशा से फौज को जो भी मिला उसको उसकी ही दसतार से बांध दिया और आंखों पर पट्टी बांध दी। इन सबको दफतर की तरफ कुएं के पास बैठा दिया। फौज के कर्मचारी हाल के कमरे में दाखिल हुए और सबको बाहर आने के लिए कहा। सबको ध्यानपूर्वक देखकर नौजवानों को एक तरफ कर लिया। लगभग २९ नौजवानों को हथकड़ियों से बांध लिया। जो बड़ी उम्र के थे उनको कुहनी के बल चलने के लिए कहा गया और राइफलों के बट से पीटा गया। इस मार-पीट में गुरुद्वारा साहिब के रागी सिंघ भाई जोगिंदर सिंघ शहीदी प्राप्त कर गए। गुरुद्वारा साहिब के कर्मचारियों के कमरों की तलाशी ली गयी और उनके सामान की तोड़-फोड़ की गयी। तलाशी के दौरान स. सरबजीत सिंघ, जिला अध्यक्ष, सिक्ख स्टूडेंट्स फेडरेशन को गिरफ्तार कर लिया गया। फौज के कर्मचारी उसको बुरी तरह से पीटते तथा गालियां निकालते हुए हथकड़ियों से बांधकर ले गए।

शूरवीर एवं गौरवशाली सिक्ख कौम को सबक सिखाने या उसके अस्तित्व को मिटा देने के मंद इरादों से प्रेरित हमले करने के प्रयत्न आज भी किए जा रहे हैं। सिक्ख इतिहासकारों तथा निष्पक्ष कलमकारों को ऐसे सिक्ख इतिहास को पूरी जांच-परख करने के बाद सही रूप में लोगों के सामने पेश करना चाहिए, ताकि सारी दुनिया को यह पता चल सके कि सिक्ख अभी भी अपने देश, धर्म, कौम की बेहतरी के लिए, कुर्बान होने के लिए दूसरी कौम के लोगों की तुलना में पहली कतार में खड़ा है।

निकट से देखा : सिरदार कपूर सिंघ

*– स. जैतेग सिंघ अनंत**

'सरदार' फ़ारसी का शब्द है। 'सर' को पंजाबी में 'सिर' कहा जाता है। 'सरदार' शब्द का असली वजूद फ़ारसी में से आया है। जब सिंघों का मुगलों के साथ जंग, विरोध का सिलसिला शुरू हुआ तब यह शब्द सिक्खों में प्रचलित हो गया। इस शब्द का प्रयोग भाई गुरदास जी ने भी किया है।

सिरदार कपूर सिंघ ने जब इस शब्द का प्रयोग 'सिरदार' के तौर पर किया तो इस शब्द का सिक्खी परंपरा में आकर पंजाबीकरण हो गया। डॉ. मोहन सिंघ दीवाना के शब्दों में यह शब्द गुरमुखिआ गया, इसलिए यह 'सरदार' बन गया। इस तरह फ़ारसी के 'सरदार' शब्द को सिरदार कपूर सिंघ ने गुरमुखी में बदल दिया। यही कारण है कि 'सिरदार' शब्द लोगों की जुबान पर पकता गया। जब सिरदार कपूर सिंघ 'सिरदार' शब्द का प्रयोग करते हैं तो वे इसे सिक्खी की परंपरा के साथ जोड़ते हैं।

भाई साहिब सिरदार कपूर सिंघ उच्च कोटि के विद्वान और चिंतक थे। वे फ़ारसी, उर्दू, संस्कृत और पंजाबी के उच्चकोटि के ज्ञाता थे। सिरदार जी की विलक्षण शख्सियत राष्ट्रीय प्रतिभा की सूचक थी। सिरदार साहिब का पैतृक गाँव मंनण चक्क कलां, ज़िला लुधियाना था, परन्तु ज़मीन-जायदाद के सम्बन्ध में आपका परिवार चक्क नंबर ५३१, लायलपुर में बसा हुआ था। आपका जन्म भी इसी गाँव में २ मार्च, १९०९ ई. को माता हरनाम कौर तथा पिता स. दीदार सिंघ के घर हुआ। आपने अपनी प्रारंभिक और प्राथमिक शिक्षा अपने गाँव में ही प्राप्त की।

नौवीं और दसवीं कक्षा के लिए आपने खालसा हाई स्कूल लायलपुर में दाख़िला लिया। इस स्कूल के प्रधानाचार्य मास्टर तारा सिंघ थे, जो बाद में अकाली दल के वाहद नेता और पंथ-रत्न नाम से लोकप्रिय हुए। दसवीं की परीक्षा में सिरदार कपूर सिंघ पंजाब भर में से पहले स्थान पर आए। आपकी इस शानदार सफलता के कारण आप मास्टर तारा सिंघ की 'आँखों का तारा' बन गए। मास्टर जी के साथ इनकी नज़दीकी और प्यार-मोहब्बत का आलम यहीं से शुरू हुआ। अब इन्होंने गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर में दाख़िला ले लिया। विद्यार्थी जीवन में आर्थिक रूप से हाथ तंग होने के कारण इन्होंने अपनी छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों को थोड़ी-थोड़ी ट्यूशन फीस लेकर पढ़ाने का कार्य किया, ताकि घर से मदद लेने से मुक्त हो सकें। इन्होंने कैंब्रिज यूनिवर्सिटी से दर्शन-शास्त्र की पढ़ाई की थी। अंग्रेज़ों के समय सिक्खों में आई. सी. एस. बनने

*सरी, कनाडा, फोन : ०११-७७८-३८५-८१४१

वाले उंगलियों पर गिने- चुने व्यक्ति थे, जिनमें सिरदार कपूर सिंघ एक थे।

देश के विभाजन से पहले और बाद में ये अनेक जगहों पर डिप्टी कमिशनर के पद पर विराजमान रहे। इनके हृदय में सिक्खी की धड़कन थी। ये सिक्खी की आन और शान के साथ कोई समझौता नहीं कर सकते थे। ये स्वभाव के सख़्त और बेपरवाह भी थे। यही कारण था कि इन्होंने पंजाब के गवर्नर चन्दू लाल त्रिवेदी के भेजे सर्कुलर को अपने पैरों की जूती के नीचे रौंद दिया। मास्टर तारा सिंघ ने सिक्खों के ख़िलाफ़ रची इस बड़ी साजिश के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। पंडित नेहरू ने माफी मांगी, परन्तु यह माफी इतनी महंगी पड़ी कि सिरदार कपूर सिंघ को डिप्टी कमिशनर की कुर्सी से मुक्त कर दिया गया। कसूर सिर्फ़ इतना था कि इन्होंने सरकारी भेद खुले तौर पर प्रकट करने की हिम्मत और दिलेरी दिखाई थी।

सिरदार साहिब को २ सितंबर, १९५० ई. को जबरन नौकरी से बर्ख़ास्त कर दिया। इन्होंने पंजाब सरकार के ख़िलाफ़ पंजाब हाई कोर्ट में केस दायर किया। केस काफ़ी लम्बा समय चला। अदालती फ़ैसले ने सिरदार साहिब को इन्साफ नहीं दिया। उन दिनों सिरदार साहिब पंजाब की राजधानी शिमला में निवास करते थे। इनके दिल में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के मुखी और देश की स्वतंत्रता के महान सेनानी भाई साहिब भाई रणधीर सिंघ के प्रति अथाह श्रद्धा और सत्कार था। एक दिन सिरदार साहिब भाई साहिब भाई रणधीर सिंघ के तपोवन कुमार हट्टी, सोलन हिल्ज़ पहुंच गए। भाई साहिब भाई रणधीर सिंघ आराम कुर्सी पर विराजमान थे। दोनों की फतह साझी हुई। उन्होंने सिरदार कपूर सिंघ को कुछ बोलने से पहले ही कह दिया, ''अकाल पुरख को शायद यही मंज़ूर था। आपने तो अभी पंथ की बहुत सेवा करनी है, इसलिए सदा चढ़दी कला में विचरण करो। पंथ को जो दे सकते हो दो, कभी कुछ लेने की आशा मत करो। कलग़ियां वाले ने पंथ के लिए आपसे बहुत सेवा लेनी है। आपकी सेवा को पंथ रहती दुनिया तक याद रखेगा।'' सिरदार कपूर सिंघ करीब दो घंटे भाई साहिब के पास बैठ कर वापिस शिमला लौटे। इस मुलाकात ने इनके मनोबल को बुलंदी प्रदान की।

सिरदार कपूर सिंघ का मास्टर तारा सिंघ के साथ अच्छा संपर्क था। मास्टर जी को शिरोमणि अकाली दल के लिए ऐसे विद्वान, बुद्धिमान और काबिल व्यक्ति की ज़रूरत थी। उन्होंने सिरदार कपूर सिंघ को शिरोमणि अकाली दल में सम्मानजनक जगह दी। सन् १९६२ में भारत का तीसरा आम चुनाव आ गया। मास्टर जी ने उस समय शिरोमणि अकाली दल की तरफ से सिरदार साहिब को लुधियाना क्षेत्र की लोक सभा सीट के लिए खड़ा कर दिया। उस समय शिरोमणि अकाली दल को राष्ट्रीय पार्टी के तौर पर मान्यता नहीं दी गई थी। शिरोमणि अकाली दल की स्वतंत्र पार्टी के साथ गहरी मित्रता थी, इसलिए लोक सभा की सीट उनके चुनाव-चिन्ह पर लड़ी जानी थी। सिरदार साहिब इस सीट पर अपने विरोधी कांग्रेस के उम्मीदवार स.

मंगल सिंघ (गिल्ल) को हरा कर बड़ी शान के साथ दिल्ली पार्लियामेंट में पहुंच गए।

दिल्ली पार्लियामेंट में पंजाब के पुनर्गठन के बारे में एक बिल ३ सितम्बर, १९६६ ई. को लोक सभा में पेश किया गया। सिरदार साहिब ने इस बिल का डटकर विरोध किया और इस बिल को ठुकराने के तीन कारण भी पेश किये। पहला कारण, यह बिल पाप से भरा है। दूसरा यह कि इसे एक अयोग्य और अशिक्षित 'दाई' ने जन्म दिलाया है। तीसरा यह कि यह कौम के विशाल हितों के विरुद्ध है। यह राष्ट्रीय अखंडता को कमज़ोर करने और देश में जिन्होंने राजनीतिक सत्ता संभाली हुई है, उनके अखंडता में भरोसे को ख़त्म करने की तरफ लेकर जाएगा। इनकी इस ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण व तर्क-भरपूर तकरीर ने सरकारी बैंचों को हिला कर रख दिया। सिक्ख स्टूडेंट फेडरेशन ने इस तकरीर की छोटी-छोटी पुस्तिकाएं अंग्रेज़ी, पंजाबी में लाखों की संख्या में छपवा कर बांटी थी। इस कारण सिरदार जी की पहचान में भी विशाल वृद्धि हुई। पंजाबियों और सिक्खों के हितों का रक्षक विशेष तौर पर नौजवानों के दिल की धड़कन बन गया। इनकी इस प्रभावशाली स्पीच ने ही मुझे (लेखक को) प्रभावित किया और मुझे भी इनकी संगत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

उन दिनों मैं गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्स, चंडीगढ़ का विद्यार्थी था। मेरा कॉलेज चंडीगढ़ के सेक्टर नंबर १० में स्थित था। सिरदार साहिब की ७०७ नंबर कोठी सेक्टर ११, चंडीगढ़ में थी जो मेरे कॉलेज से बड़ी मुश्किल से आधा किलोमीटर की दूरी पर थी। इस तरह मैं कभी-कभी इनकी कोठी पर इनके दर्शन करने और इनके गंभीर विचारों का आनंद लेने के लिए चला जाता था। ये नौजवानों से मिल कर सदा खुश होते। नौजवानों को पंथ की ख़ातिर सेवा करने का नेतृत्व देते। जब भी कोई नौजवान इनसे मिलता, ये अपनी दूरंदेशी, बुद्धिमत्ता और विद्वता भरपूर कीमती नुक्तों एवं नसीहतों के साथ नौजवानों को रौशनी, नई सोच, नई दिशा प्रदान कर देते और उनके अंदर जमी मैल को धोकर पवित्र कर देते। ये नौजवानों के लिए रौशनी-मीनार और आदर्श थे।

२२ नवंबर, १९६७ ई. को प्रात: काल पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ पी. जी. आई. चंडीगढ़ में हमसे सदा के लिए बिछड़ गए। यह ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गई। उनकी मृतक देह को बरास्ता लुधियाना, फिलौर, फगवाड़ा, जलंधर होते हुए श्री अमृतसर लेकर आना था। यह बात स्पष्ट थी कि उनका दाह संस्कार कल ही होगा। मैं भी रात को उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए श्री अमृतसर पहुंच गया। मास्टर जी की मृतक देह अभी श्री अमृतसर पहुंची नहीं थी, इसलिए मैंने मास्टर जी के घर जाने की बजाय सिक्खों के महान विद्वान भाई धरमानंत सिंघ के घर का जा दरवाजा खटखटाया। उनका घर उसी गली में मास्टर जी के घर से तीन-चार घर पहले था। मैं रात में इनकी कोठी में ठहरने के बाद सुबह मास्टर जी की कोठी में पहुंच गया। मास्टर जी की देह फूलों से लदी तख्त पर पड़ी थी। मेरे देखते-देखते उनके हर-दिल-अज़ीज़ रह चुके

विद्यार्थी और उनके बेशकीमती हीरे सिरदार कपूर सिंघ शोक में डूबे पहुंच गए। सिरदार कपूर सिंघ अर्थी के बने फ्लोट पर मास्टर जी के सिरहाने बैठे शमशान घाट तक गए। ये मानवी जीवन-मूल्यों के बड़े मुद्दई थे। ये अपने फ़र्ज़ की अदायगी को भला कैसे भूल सकते थे! जिस उस्ताद से शिक्षा लेकर बड़े मुकाम पर पहुंचे आज ये इस दुख की घड़ी में उनकी अर्थी को कंधा देने से भी पीछे न हटे। यह थी सिरदार कपूर सिंघ के सुंदर किरदार की एक और झलक।

६ अक्तूबर, १९६८ ई. को मास्टर तारा सिंघ और संत फतिह सिंघ के अकाली दल पंथक-एकता को मुद्दा बनाकर एक हो गए। श्री अकाल तख़्त साहिब पर दोनों दलों के नेता, जिनकी संख्या एक दर्जन से अधिक थी, पहुंचे हुए थे। सिरदार कपूर सिंघ के अलावा सिंघ साहिब ज्ञानी भुपिंदर सिंघ, स. किरपाल सिंघ चक्क शेरा, स. आतमा सिंघ, स. अजमेर सिंघ और दूसरी तरफ संत चंनण सिंघ, जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा तथा संत फतिह सिंघ ग्रुप के तीन-चार और जत्थेदार उपस्थित थे। दोनों दलों ने अपने-अपने दल को ख़त्म कर नये शिरोमणि अकाली दल का रूप इख्तियार कर लिया। सिरदार कपूर सिंघ समूचे अकाली दल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स्थापित किये गए। श्री अकाल तख़्त साहिब पर इस शुभ कार्य की एकता पर मोहर लगाई गई। दोनों दलों के सामूहिक समझौते पर सिरदार कपूर सिंघ के भी हस्ताक्षर थे।

सर्दियों के दिन थे। सन् १९६९ में पंजाब विधान सभा के मध्यकालीन चुनाव का बिगुल बज गया। अकाली दल का जनसंघ के साथ सीटों एवं एक-दूसरे को हिमायत देने का समझौता हो गया। उस समझौते के अंतर्गत सिरदार कपूर सिंघ को समराला क्षेत्र से उम्मीदवार घोषित किया गया। भारत के सभी सिक्ख नौजवानों में यह सीट प्रतिष्ठा की सीट बन गई। हर तरफ़ यही चर्चा थी कि सिरदार साहिब को हर हाल में पंजाब विधान सभा में भेजना है। सिरदार साहिब के लिए चुनाव जीतना आसान नहीं था। इनकी भाषा और ढंग-तरीके पार्टी वर्करों एवं समर्थकों के अनुकूल नहीं थे। जब ये चुनाव प्रचार के लिए निकलते तो रास्ते में वोटरों के इकट्ठ इनका अभिनंदन करते। कई बार कोई सिक्ख भाईचारे से सम्बन्धित दाढ़ी-कटा वोटर वोट देने की ख़ुशी ज़ाहिर करता तो ये उसे सख़्त शब्दों में मना करते कि मुझे तेरी वोट की ज़रूरत नहीं, तूने तो सिक्खी को तिलांजलि दी हुई है। किसी से कहते, तू पतित है, तू सिगरेटनोशी करता है। तूने तो पहले से ही बाज़ां वाले गुरु को पीठ दिखा रखी है। मुझे तेरी हिमायत की ज़रूरत नहीं। इससे स्पष्ट रूप से इनका सिक्खी-प्यार झलकता था। इनके आगे पहले नंबर पर सिक्खों के जीवन-मूल्य थे। यहां तक कि ये अपने वोटरों से स्पष्ट कह देते थे कि आप वोट पंथ को दे रहे हो, मेरे पर कोई एहसान नहीं कर रहे। चुनाव-मैदान में राजनीतिक नेता कम धार्मिक नेता ज्यादा लगते थे। ये सिक्खी की आन और शान के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकते थे।

मैं उन दिनों सिक्ख नेशनल गार्ड्स का संस्थापक प्रधान था। शिरोमणि अकाली दल

चंडीगढ़ इकाई की कार्यकारी समिति का भी सदस्य था। इसके साथ ही शिरोमणि अकाली दल की इकाई में सबसे ज्यादा प्रतिनिधि मेरे साथ थे। विद्यार्थी जीवन था, जोश था, तरंग थी, काम करने का शौक और सामर्थ्य था। मैंने अपनी संस्था की तरफ से इस चुनाव में सिरदार साहिब की हिमायत के लिए जाने का फ़ैसला किया। अपने चार साथियों के साथ मतदान से दो दिन पहले ही समराला के चुनाव कार्यालय में पहुंच गया। चुनाव के समय संत फतिह सिंघ एक दिन समराला आए। सबसे पहले माईक के सामने सिरदार साहिब खड़े हो गए। वे संस्कृत में कुछ उच्चारण करते रहे, परन्तु किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था— ''ऐ हिंदू भाइओ! आपकी गीता यह बात कहती है कि आदमी सच्चा होना चाहिए। जो उसके मन में हो वह उसकी जुबान पर होना चाहिए। मैं आपकी गीता पर अमल करता हूं, फिर बताओ कि आप मेरे से किस बात से नाराज़ हो कि कपूर सिंघ को वोट नहीं डालनी। आपकी नाराज़गी मेरे से है कि मैं सिक्खी की बात करता हूं। यदि मेरे साथ इस बात से नाराज़ हो कि कपूर सिंघ सिक्खी की बात करता है तो मैं हर समय सिक्खी की ही बात करूंगा। आपके चाहे लगे घुटने या लगे टखने। यदि इसी कारण आपने मुझे वोट नहीं डालनी तो मत डालो।'' 'वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फतह' कह कर बैठ गए।

हमारी टीम को समराला क्षेत्र के मानकी गांव भेजा गया। एक ट्रैक्टर-ट्राली पर चुनाव कार्यालय से सारी चुनाव-सामग्री लेकर मानकी गाँव नंबरदार के घर पहुंचे। जब हम मानकी पहुंचे तो नंबरदार हमारे जाने से पहले ही कांग्रेस की झोली में जा बैठा। हमने अगले दिन जितना भी हो सका, वोट डलवाने का कार्य किया। सिरदार जी समराला की विधान सभा की सीट नसराली के कपूर सिंघ कांग्रेसिए और कम्युनिस्ट उम्मीदवार बाग़ी की ज़मानत ज़ब्त करा १६६६ वोटों से जीत गए।

पंजाब विधान सभा के इस चुनाव में बहुमत में शिरोमणि अकाली दल और उसकी समर्थक पार्टियां— पंजाब जनसंघ तथा अन्य आ गईं। पंजाब के मुख्यमंत्री का ताज जस्टिस गुरनाम सिंघ के सिर पर सज गया। ऐरे-गैरे को मंत्रीमंडल में लिया गया, परन्तु अफ़सोस, सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे विद्वान, चिंतक, पंथदर्दी को आँखों से ओझल किया गया। जनसंघ इस बात पर अडिग था कि काले चोर को मंत्री बना दो, परन्तु सिक्खी की बात करने वाले, सिक्खों के बोल-बाले और सिक्खों की चढ़दी कला का संकल्प धारण करने वाले सिरदार कपूर सिंघ को किसी भी सरकारी उच्च पदवी पर न बिठाया जाये। गुरनाम सिंघ की मजबूरी और पैरों में पड़ी जंजीर उसे सदा वर्जित करते रहे कि कहीं सिरदार कपूर सिंघ का नाम मुँह में से न निकल जाये।

अब सत्ता के लोभी, चापलूस और ख़ुशामदी लोगों की नयी हुकूमत से अपने काम करवाने और सरकारे-दरबारे अपनी जगह बनाने के लिए होड़ लग गई। इनमें चंडीगढ़ के कुछ व्यापारियों और मौकाप्रस्त लोगों ने जस्टिस गुरनाम सिंघ के

मंत्रीमंडल की एक बड़ी पार्टी चंडीगढ़ के अरोमा होटल में करने का फ़ैसला लिया, परन्तु इसके विपरीत भाई लालो के उपासक नौजवान, हाथों से किरत करने वाले कामगार एवं वर्कर वर्ग इस बड़ी पार्टी के ख़िलाफ़ थे। नौजवान वर्ग का नेतृत्व मेरे पास था। वर्कर वर्ग का नेतृत्व स. हरबंस सिंघ दुआ के पास था। वे कुर्बानी वाले गुरसिक्ख थे, जिन्होंने पंजाबी सूबे के कई मोर्चों में लम्बी कैद काटी थी। हमने फ़ैसला किया कि चंडीगढ़ की संगत और सिक्ख नेशनल गार्ड्स की तरफ से एक शानदार पार्टी सेक्टर-२७ में दी जाये, जिसमें ज्यादातर छोटे वर्ग की पंथक और निष्काम सोच वाले तथा सिरदार कपूर सिंघ के प्रति श्रद्धा एवं समर्पित भावना रखने वालों को ही न्यौता दिया जाये।

सिरदार साहिब निश्चित दिन, निश्चित समय पर पहुंच गए। उनको १९ और २७ सेक्टर के आरंभ में रसीव किया गया। सिरदार कपूर सिंघ के साथ स. आतमा सिंघ पंजाब सरकार के मंत्री थे। वे ही सिरदार जी को अपनी कार में लेकर आए थे। स. जोगिंदर सिंघ रेखी, पूर्व सलाहकार शिरोमणि अकाली दल, स. गुरबखश सिंघ (शेरगिल्ल), स. करतार सिंघ (टक्कर) अम्बाला इस काफ़िले में शामिल थे। सिरदार साहिब को रसीव करते समय इनके गले में फूलों का हार पहनाने का नेतृत्व मेरे द्वारा किया गया। जब मैं पहला हार उनके गले में डालने लगा तो इन्होंने पहनने से इनकार कर दिया। इन्होंने मुझे बड़े प्यार से कहा कि पहला हार मंत्री स. आतमा सिंघ के गले में डालो। ये हमारी सरकार के आदरणीय मंत्री हैं। हमारा पहला सम्मान अपने मंत्री के लिए है। मैं उनसे कहीं छोटा पंथ का सिपाही हूं। यह था सिरदार साहिब का दूसरों के प्रति सम्मान! फिर एक जुलूस की शक्ल में रामगढ़िया भवन में ले जाया जा रहा था। सबसे आगे पंद्रह बावर्दी बैंड-बाजे वाले अपनी सांगीतिक धुनों के साथ चल रहे थे। इसके पीछे मेरी संस्था के साथ जुड़े ग्यारह नौजवान नंगी कृपाणों के साथ गगनभेदी नारे— 'फ़ख़्र-ए-कौम सिरदार कपूर सिंघ ज़िंदाबाद' लगाते हुए रामगढ़िया भवन जा रहे थे। सम्मान समारोह वाली जगह पर पहुंच गए।

सबसे पहले सम्मान वाली जगह पर पहुंचने पर अपनी संस्था की तरफ से गार्ड ऑफ आनर्स पेश किया। इनको नंगी कृपाणों से सलामी दी गई। फिर ये नंगी कृपाणों की छाया में पंडाल में दाखिल हुए। पंडाल खचाखच भरा हुआ था। मंच पर सिरदार कपूर सिंघ सुशोभित थे। इनकी एक तरफ़ स. आतमा सिंघ और दूसरी तरफ स. जोगिंदर सिंघ रेखी बैठे थे। सबसे पहले मुझे नौजवान वर्ग और अपनी संस्था की तरफ से सम्मान-पत्र पढ़ने का हुक्म हुआ, जिसे पढ़ कर सिरदार साहिब को भेंट कर दिया। फिर हरबंस सिंघ दुआ ने चंडीगढ़ की समूह संगत और पंथदर्दी लोगों की तरफ से सिरोपा, शाल, सम्मान-चिह्न एवं श्रीसाहिब भेंट किया। यह सच्चे और शुद्ध प्यार की तार, सच्ची भावना, निश्छल तथा परोपकारी सोच से भीगा पाक सम्मान था। इसमें विलक्षण और अनोखा अपनापन था। सिरदार साहिब की हयाती में यह एक बहुत बड़ी पार्टी थी। इन्होंने इस सफल कार्य

के लिए मुझे दो बार बधाई दी और रस्मी धन्यवाद कहा।

सिरदार साहिब पंजाब विधान सभा में सिक्खों और पंजाबियों के मसले बड़ी ख़ूबसूरती से उठाते थे। विधान सभा के चेंबर में मैं अनेक बार इनके दर्शन करने जाता था। इनके बैठने-उठने का रंग-ढंग दूसरे नेताओं से भिन्न और विलक्षण था। स्पीकर की कुर्सी को जो सम्मान सिरदार साहिब देते थे, वह न तो अभी तक किसी ने दिया है और न ही भविष्य में किसी से आशा की जा सकती है। जब भी ये बाहर जाने के लिए अपनी सीट से उठते या बैठते तो बड़े अदब के साथ स्पीकर की सीट की तरफ मुंह कर, अपनी दाहिनी बाजू को फोल्ड कर, सिर झुका कर अपनी सीट छोड़ते थे। यह था इनका स्पीकर की सीट के लिए बेहद सम्मान। वर्तमान युग में ऐसा सम्मान कौन करता है?

श्री अकाल तख़्त साहिब की तरफ से सिरदार कपूर सिंघ को ११ अक्तूबर, १९७३ ई. को 'नेशनल प्रोफ़ेसर ऑफ सिक्खिज़म' का सर्वोच्च अवार्ड प्रदान किया गया। इस समय सिरदार कपूर सिंघ ने गुरु साहिबान द्वारा दिखाए सिक्खी-मार्ग को रोशनाने वाली एक ऐतिहासिक तकरीर मीरी-पीरी के केंद्र श्री अकाल तख़्त साहिब के सम्मुख शिरोमणि अकाली दल की महान उच्च हस्तियों की सभा में पेश की, जो ऐतिहासिक और यादगारी पल थे। इन सभी कार्यों की योजनाबंदी और सोच ज्ञानी गुरदित्त सिंघ की थी। यह अवार्ड प्रदान करने के कार्यक्रम का नेतृत्व जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा ने किया, जो सिरदार कपूर सिंघ का रोम-रोम से सत्कार करते थे।

स. दरशन सिंघ फेरूमान ने अपनी वसीयत अगस्त, १९६९ ई. में लिखी। सिरदार कपूर सिंघ ने अपने दस्तख़त द्वारा उसकी तसदीक की। इसके साथ उनकी अस्थियां जल-प्रवाह करने हेतु स. दरशन सिंघ फेरूमान को प्यार करने वाले लोग बड़ी संख्या में कीरतपुर साहिब पहुंचे। पंथक सोच के पहरेदार सिरदार कपूर सिंघ की अंतिम क्षण तक ख़ामोशी उस महान योद्धा के अंतिम सफ़र में हमसफ़र थी। इसी तरह २७ अक्तूबर, १९६९ ई. को स. दरशन सिंघ फेरूमान के शहीदी प्रस्ताव पर पंजाब विधान सभा में एक यादगारी अकीदत भेंट की।

श्री अमृतसर साहिब में घटित १३ अप्रैल, १९७८ ई. का साका 'ख़ूनी वैसाखी' नाम से जाना जाता है। इस दिन नकली निरंकारियों के साथ हुए विवाद में तेरह सिंघ सतिगुरु की आन और शान पर पहरा देते हुए शहीदी पा गए। इन सिंघों की याद में २२ अप्रैल, १९७८ ई. को गुरुद्वारा मंजी साहिब में भोग समागम रखा गया था, जिसमें सिक्खों की अलग-अलग संस्थाओं के प्रमुख, नेता, विद्वान, संत-महापुरुष बैठे थे। सिरदार कपूर सिंघ भी सतिगुरु की हजूरी में उपस्थित थे। जब सिरदार कपूर सिंघ के बोलने की बारी आई तो आप जी ने संगत के सामने अपना भाषण देना शुरू किया। भाषण में इन्होंने बंगाल के उच्च कोटि के विद्वान श्री अरोबिन्दो घोष का किसी प्रसंग में ज़िक्र किया, जिसमें बताया कि सिक्ख कौम के साथ बहुत धक्का हो रहा है। सिरदार

कपूर सिंघ का भाषण अति बौद्धिक स्तर का था। संगत आपकी विद्वता को समझ न सकी। संगत में से कुछ सज्जन ऊंची आवाज़ में खड़े होकर कहने लगे कि इन्हें नीचे उतार दो। फिर सिरदार कपूर सिंघ पूरे मलवई लहजे में बोले, ''बोलूं या न बोलूं?'' संगत में से आवाजें कसी गईं— ''न! न! न!'' यह सब देखते ही उस समय के शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा एक दम खड़े हो गए। उन्होंने माईक से केवल यह कहा, ''साधसंगत जी! ये कौम के बहुत बड़े विद्वान और अनमोल हीरे हैं।'' फिर सिरदार कपूर सिंघ ने अपने भाषण को पूरा करते हुए सिक्ख कौम की दरपेश मुश्किलों पर रौशनी डालने का यत्न किया। पंथ के सामने आ रही ऐसी चुनौतियों को कैसे रोका जा सकता है, के प्रति इन्होंने पूरे तर्क और दलील के साथ अपनी बात कही। संगत की तरफ से फिर जैकारे पर जैकारा छोड़ा जाने लगा। यह इनकी शख्सियत की सुंदर झलक मेरी आँखों ने (लेखक ने) ख़ुद देखी और सुनी। सचमुच ये सिक्खों के दिल की धड़कन थे।

सन् १९८२ ई. में सिरदार कपूर सिंघ चंडीगढ़ से अपने गाँव जगराओं पक्के तौर पर आकर रहने लगे। एक दिन स्नान करते समय १३ जून, १९८२ ई. को ग़ुसलखाने में ही दिल का दौरा पड़ गया। इनको उठा कर पलंग पर लिटाया गया। छोटा भाई तुरंत डॉक्टर को बुला कर ले आया। इन्हें होश नहीं था और ये बेहोश थे। डॉक्टर ने देखा कि इन्हें दिल का दौरा पड़ा है। इन्हें चंडीगढ़ पी. जी. आई. लाया गया। वहां ये अधरंग का शिकार हो गए। फिर इनका भतीजा स. चंचल सिंघ इन्हें पुश्तैनी घर जगराओं ले आया। इन्होंने स्पष्ट कह दिया कि अब मैंने पी. जी. आई. से इलाज नहीं करवाना।

कुछ समय बाद जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा को इस बात का एहसास हुआ कि सिक्खों के एक महान विद्वान और चिंतक इलाजहीन हैं। अचानक एक दिन जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा जगराओं पहुंचे और सिरदार कपूर सिंघ से विनती की कि ''हमें थोड़ी सेवा का मौका दो!'' टौहड़ा साहिब की पहलकदमी ने इन्हें दयानन्द अस्पताल में दाख़िल करवा दिया। वहां ये चार महीने इलाज की ख़ातिर रहे। इनकी एक टांग कमज़ोर हो गई थी। एक बाजू भी थोड़ी बेजान हो गई। शरीर काफ़ी निढाल हो चुका था। फिर गांव लाया गया। थोड़ा-थोड़ा चलने लगे। थोड़ी-थोड़ी बातचीत करने लायक हो चुके थे।

बटाला में डॉक्टर सुरिंदर सिंघ धालीवाल रहता था। वह इनका नज़दीकी रिश्तेदार था और इन्होंने उसे अपना पुत्र बनाया हुआ था। सिरदार साहिब साका नीला तारा (Operation Blue Star) से पहले कुछ दिन बटाला आ गए। इन्होंने अपने एक शागिर्द स. हरदीप सिंघ (बाजवा) को संदेश भिजवा दिया कि मैं आजकल यहां आया हूं। स. हरदीप सिंघ की प्रसन्नता की हद न रही। वह रोज़ाना सिरदार साहिब का हाल-चाल पूछने आ जाता था। इसके साथ उसकी कोशिश होती कि सिरदार साहिब को थोड़ी-थोड़ी सैर अवश्य करवाई जाये। सिरदार साहिब अभी भी कुछ हद

तक अधरंग से पीड़ित थे। सैर करने से उनका सारा शरीर हरकत में आ जाता था। वे थोड़ा-थोड़ा चल लेते थे। स. हरदीप सिंघ अपने साथ हर रोज़ कोई न कोई बुद्धिमान व्यक्ति लेकर जाता था। एक दिन सेवामुक्त कर्नल रूप सिंघ ने सिरदार साहिब को अपने कंधों का सहारा देकर थोड़ा चलाने का यत्न किया। थोड़ा-सा चलने के बाद सिरदार साहिब थकावट महसूस करते हुए रुक गए। उन्होंने तीन बार इसी तरह किया, तो ये कर्नल की तरफ देखने लगे। इन्होंने कहा कि यह लड़का मेरी बात समझता है। फिर स. हरदीप सिंघ की तरफ मुंह किया और पूछा कि सिक्खों का नेता कौन है? स. हरदीप सिंघ चुप था। इसी प्रकार तीन बार यही बात दोहराते गए कि सिक्खों का नेता कौन है? अंत में इन्होंने इस सवाल का जवाब भी खुद ही दिया। सिक्खों का नेता वही, जो सिक्खी की बात करे। इस प्रकार इन्होंने ये शब्द तीन बार दोहराए, मगर ये किसी नेता का नाम अपनी जुबान से नहीं बता सके।

सिरदार साहिब की ज़िंदगी का हर मौका सुनहरा, रोचक और यादों भरा था। जब ये स्वस्थ थे तो ये प्रात: काल चार बजे सैर के लिए जाते थे। सैर के समय छोटे भाई स. गंगा सिंघ का पोता स. अमरजीत सिंघ भी साथ होता था। फिर स्नान करने के बाद एक परांठा दही व नींबू के अचार के साथ लेते। फिर कुछ अखबारें व पुस्तकें पढ़ते। दोपहर में एक बजे एक सब्ज़ी, एक दाल, एक मीठी चीज़ और दो रोटी इनकी ख़ुराक थी। फिर दो-तीन घंटे तक आराम करते। फिर चार बजे लम्बी सैर को निकल जाते। फिर घर आकर दोनों भाई घर के आगे आराम-कुर्सियां लगा लेते और बातों का दौर चलता। दोनों भाइयों का आपसी प्यार अच्छा-खासा था। ये खाने में ज्यादातर मीठी चीजों के बड़े शौकीन थे। इनका भतीजा चंचल सिंघ शर्बत की पंद्रह-पंद्रह बोतलें चंडीगढ़ देकर आता था। बर्फ़ी के ये बहुत शौकीन थे। पांच वर्ष तक ये लोकसभा के सदस्य रहे। दीवाली ये सदा अपने गांव में अपने परिवार के साथ ही मनाते। ये घर में मिठाइयों की गागर भर देते थे।

सिरदार साहिब स्वभाव से बेबाक, कथनी और करनी के पूरे थे। इनकी ज़िंदगी का हर किरदार और अंदाज़ ख़ूबसूरती का मुजस्समा होता। ये अपने तर्क से हर एक को निरुत्तर कर देते थे।

'साका नीला तारा' ने सिरदार कपूर सिंघ पर गहरा प्रभाव डाला। धीरे-धीरे इनके शरीर की हरकत बंद हो गई। १८ अगस्त, १९८६ ई. को अमृत वेले ४ बज कर १० मिनट पर इस फ़ानी संसार से कूच कर गए। अंतिम समय केवल इनका भतीजा चंचल सिंघ इनके पास बैठा था। इनका यह बिछोड़ा सारे देश व कौम के लिए असहनीय था। ये अपने पीछे यादों के अनंत भंडार छोड़ गए। इनकी ख़ूबसूरत शख्सियत अपने आप में 'सिरदार कपूर सिंघ स्कूल ऑफ सिक्ख थॉट' की जन्म-दाती है।

किसु भरवासै बिचरहि भवन

*-डॉ. परमजीत कौर**

प्राणी जन्म से मृत्यु तक सारी उम्र किसी न किसी कार्य में लगा रहता है। ये कार्य कभी समाप्त नहीं होते। श्वासों की डोर का कोई भरोसा नहीं, कब टूट जाये। हमें यह विचार करना चाहिए कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है। हमारे जीवन की यह व्यस्तता हमें कहां ले जा रही है? अभी तक हमने कितना नाम-धन संचित किया है? अपने आत्मिक जीवन को कितना संवारा है? हमारे हाथ अभी तक खाली तो नहीं हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि पाठ-पूजा करते समय भी हम अपने साथ ही जुड़े रहते हैं? हमारा पाठ करना भी अन्य कार्यों जैसा एक रूटीन वर्क तो नहीं बन कर रह गया है? श्री गुरु अरजन देव जी हमारे जीवन का चित्र हमारे समक्ष रखकर समझा रहे हैं कि हमने ऐसे साथी बनाये हुए हैं, जिन्होंने हमारे साथ नहीं जाना। हम उन जंजालों में फंसे हुए हैं जो हमारे लिये व्यर्थ हैं :

छोडि जाहि से करहि पराल ॥
कामि न आवहि से जंजाल ॥
संगि न चालहि तिन सिउ हीत ॥
जो बैराई सेई मीत ॥१ ॥
ऐसे भरमि भुले संसारा ॥
जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ (पन्ना ६७६)

गुरु साहिब जीव से पूछ रहे हैं कि हे मूर्ख! परमात्मा के बिना तू अन्य किसके सहारे संसार में विचरण कर रहा है? हे मूर्ख! प्रभु के अतिरिक्त अन्य कौन तेरा साथी बन सकता है?

किसु भरवासै बिचरहि भवन ॥
मूड़ मुगध तेरा संगी कवन ॥ (पन्ना ८९८)

यदि सारा जीवन धन-पदार्थ एकत्र करने, सुविधादायक बड़े-बड़े घर बनाने, समाज में इज्जत-सम्मान प्राप्त करने के चक्कर में तथा पुत्र, पति, पत्नी, भाई-बन्धुओं के मोह में व्यतीत कर दिया, यही नहीं, अपने सांसारिक उत्तरदायित्व को पूरा करने के उपरान्त भी यदि मोह के बंधन टूटे नहीं, बढ़ते ही गये, तो जीवन को व्यर्थ चला गया समझना चाहिए, क्योंकि यह सब कुछ आत्मिक जीवन के काम नहीं आता। श्री गुरु नानक देव जी सुचेत कर रहे हैं :

—कामि न आवै सु कार कमावै ॥
आपि बीजि आपे ही खावै ॥ (पन्ना ८९८)
—बाबा होर मति होर होर ॥
जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ॥१ ॥ रहाउ ॥
पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ॥
जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥
(पन्ना १७)

माया का अहंकार करना व्यर्थ है। पिता, पुत्र, पुत्री, स्त्री भाई-बन्धु आदि भी अन्त समय सहायक नहीं बनते। श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि यदि बेईमानी से एकत्र किये हुये धन के अहंकार में सारी उम्र गुजार दी, मन विषय-विकारों में लिप्त रहा, तो ऊपर से चाहे जितनी भी धर्म से सम्बंधित चर्चा करते रहें, कोई लाभ नहीं है :

—काहे गरबसि मूड़े माइआ ॥
पित सुतो सगल कालत्र माता
तेरे होहि न अंति सखाइआ ॥ *(पन्ना २३)*
—मतु जाण सहि गली पाइआ ॥
माल कै माणै रूप की सोभा
इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥ *(पन्ना २४)*

श्री गुरु अरजन देव जी के मत में :

रतन पदारथ माणका सुइना रुपा खाकु ॥
मात पिता सुत बंधपा कूड़े सभे साक ॥
जिनि कीता तिसहि न जाणई मनमुख पसु नापाक ॥
(पन्ना ४७)

यदि नाम की पूंजी एकत्र नहीं की तो समझो कुछ भी न किया जो करने योग्य था :

मेरा तनु अरु धनु मेरा राज रूप मै देसु ॥
सुत दारा बनिता अनेक बहुतु रंग अरु वेस ॥
हरि नामु रिदै न वसई कारजि कितै न लेखि ॥
(पन्ना ४७)

अपनी ओर से किये गये धर्म के कार्य भी तब साधारण कार्यों की तरह बन जाते हैं। क्षमा करना, सभा-सोसायटी बना कर कई वर्षों तक सुखमनी साहिब के पाठ तथा कीर्तन-दरबार करने-करवाने के बाद भी यदि जीवन में परिवर्तन नहीं आता, हृदय में प्रेम की भावना पैदा नहीं होती, परस्पर भेदभाव, झगड़े बढ़ते जाते हैं, मान-सम्मान के चक्कर से बाहर नहीं निकल सके, तो ये सारे उद्यम मात्र कर्मकाण्ड बन जाते हैं। गुरु साहिब समझा रहे हैं कि ऐसे कर्मकाण्ड बन्धन रूप ही हैं। कर्मकाण्ड या पुण्य-पाप करने से जन्म-मरण से मुक्ति नहीं मिल सकती। ममता तथा मोह भी बन्धन रूप हैं। पुत्र, स्त्री आदि का प्रेम भी कष्ट का कारण है। जिधर देखता हूं उधर ही माया-मोह रूपी जंजीर है। सच्चे नाम के बिना अन्धा मनुष्य माया के मोह में ही लिप्त है :

करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबंधु ॥
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु ॥
जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु ॥
नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु ॥
(पन्ना ५५१)

सारी जिंदगी जिस शरीर का गर्व करते रहते हैं, शरीर को सजाने-संवारने हेतु सुंदर वस्त्र, आभूषण आदि एकत्र करने में समय व्यतीत कर दिया जाता है, गुरु साहिब फरमान करते हैं कि वह शरीर मैंने दुर्गति को प्राप्त होते देखा है। सारा कुछ यहीं रह जाता है, कुछ साथ नहीं जाता। मन नाम-अमृत के बिना कभी तृप्त नहीं होता :

—तूं काइआ मै रुलदी देखी जिउ धर उपरि छारो ॥
(पन्ना १५४)
—ताजी तुरकी सुइना रुपा कपड़ केरे भारा ॥
किस ही नालि न चले नानक झड़ि झड़ि पए गवारा ॥
कूजा मेवा मै सभ किछु चाखिआ
इकु अंम्रितु नामु तुमारा ॥४॥
दे दे नीव दिवाल उसारी भसमंदर की ढेरी ॥
संचे संचि न देई किस ही अंधु जाणै सभ मेरी ॥
सोइन लंका सोइन माड़ी संपै किसै न केरी ॥
(पन्ना १५५)

शरीर का मोह, पुत्र-कलत्र आदि की ममता-मोह तथा विकारों को छोड़ने का यत्न करते रहना चाहिये। श्री गुरु ग्रंथ साहिब द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलते हुए, गुरु वाला बनकर, एकाग्रचित्त होकर प्रभु का सिमरन करना चाहिये। इस तरह करने से जप, तप, संयम आत्मिक जीवन के रक्षक बन जाते हैं। अज्ञान रूपी अन्धकार दूर हो जाता है। माया के बन्धन को तोड़ने का मार्ग दिखाई देने लगता है। चिंता-रहित होकर चढ़दी कला में रहना आ जाता है :

—बिखै बिकार दुसट किरखा करे
इन तजि आतमै होइ धिआई ॥
जपु तपु संजमु होहि जब राखे
कमलु बिगसै मधु आस्रमाई ॥ (पन्ना २३)
—अंधे चानणु ता थीऐ जा सतिगुरु मिलै रजाइ ॥
बंधन तोड़ै सचि वसै अगिआनु अधेरा जाइ ॥
(पन्ना ५५१)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि संसार में विचरण करते हुए अपने शरीर, धन-पदार्थ, पदवी या सगे-संबंधियों का अहंकार नहीं करना चाहिये। सदैव यह याद रखना चाहिये कि कुछ भी सदा साथ रहने वाला नहीं है। गृहस्थ में रहते हुए भी माया के मोह से निर्लिप्त रहने का यत्न करते हुए अपने वास्तविक साथी-परमात्मा के नाम को सदा हृदय में बसाये रखना चाहिये :

ग्रिहु मंदर महला जो दीसहि ना कोई संगारि ॥
जब लगु जीवहि कली काल महि
जन नानक नामु सम्हारि ॥ (पन्ना ३७९)

सदा परमात्मा की शरण में रहने का स्वभाव बना कर यह याद रखना चाहिये कि हमारा अपना कुछ भी नहीं है। जो कुछ प्राप्त है, परमात्मा की कृपा से है :

सभु किछु देखै तिसै का जिनि कीआ तनु साजि ॥
नानक सरणि करतार की करता राखै लाज ॥
(पन्ना ५५१)

वे जन सौभाग्यशाली हैं जो इस दुर्गम जीवन-मार्ग पर चलते हुये डगमगाते नहीं तथा अपने जन्म को सफल कर लेते हैं।

आह्वानात्मक गद्यकाव्य

आओ बन्धु !

*-श्री प्रशान्त अग्रवाल**

आओ बन्धु!

एक नया संसार बसायें, जहां 'मेरा आनंद' और 'तुम्हारा आनंद' 'हमारा आनंद' बन जाये! हमारे जीवन में बसंत का उत्स सदा-सदा के लिये वर्तमान हो जाये!

आओ भद्र!

देखो, प्रेम के उस समुद्र को, जो है अतीव गहरा, अतीव निर्मल! चलो, उसमें नहायें, प्रेम न करें, अपितु प्रेमरूप हो जायें!

आओ मित्र!

जीवन को जीयें! जीवन-रस की हर बूंद को एकात्म होकर पीयें!

आओ सखे!

व्योम की भांति स्वयं को विस्तृत बनायें! मन के समस्त ओर-छोर खुल जायें! ससीम को असीम बनायें! 'हम सबके-सब हमारे' इस भावभूमि में रम जायें!

आओ नरश्रेष्ठ!

मधुर की उपासना करें! सबके कल्याण की कामना करें! करुणा-वारि से हमारा रोम-रोम सिंचित हो जाये! पावन भावोद्रेक से अन्तर्मन का कण-कण सिक्त हो जाये!

आओ उज्ज्वल तेजपुंज!

अपने ओज-तेज से दिशाओं को आलोकित कर दें! त्याग-तप की तुंग तरंगों से त्रैलोक्य को आप्लावित कर दें!

आओ हे प्रियंवद !

अपनी वाणी से मंगलनाद करें! सृष्टि के कण-कण में नूतन आह्लाद भरें! पावन अक्षर-माला से मनस्-विचार अलंकृत कर दें! आलौकिक स्वर-माधुरी से मन-वीणा के तार झंकृत कर दें!

आओ सौम्य!

अपनी मंजुल मुखाकृति से हर हृदय में प्रशांति की बयार बहायें! अपने गमन-आगमन से वातावरण के प्रत्येक अणु को स्वच्छ बनायें।

आओ उत्तम!

श्रेष्ठ का साक्षात् करने में तत्पर हों! कर्त्तव्य के अनुपालन में सत्वर हों! हम अपने व्यवहार से मानवता का गौरव बढ़ाएं! उसके उन्नत शिखरों को छुएं! उन्हें और उन्नत बनायें!

आओ शोभन!

अपने उन्नत चरित्र से मानव-जीवन को शोभायमान कर दें! मानवीय अवस्था की श्रेष्ठता को, उसकी दुर्लभता को, उसकी उत्कृष्टता को प्रकाशवान कर दें!

आओ सुमार्ग के पथिक!

अपने सत्कर्मों से अपने अस्तित्व को सार्थक कर लें! सुविचारों की लयबद्ध शृंखला से मन-प्राण-अवचेतन को भर दें!

आओ हे शुभंकर!

शुभ का दर्शन करें! शुभ का स्पंदन सुनें! शुभ को ही ग्रहण करें! शुभ में ही रमण करें!

आओ सत्यकाम!

सत्य-पथ पर चरण धरें! श्रेय का ही वरण करें!
स्व का संधान हो! आत्म का आह्वान हो!

आओ चैतन्य!

चलो चेतना की उस धरा पर, जहां सब कुछ सत्य है, शाश्वत है, शुद्ध है, पवित्र है। वहां, जहां पहुंच कर तृप्ति भी तृप्त हो जाये, मन-चित्त-आत्मा-परमात्मा एकरूप हो जायें।

आओ हे उदात्त पुरुषार्थी!

चलो, उद्यत हों उस साधन-मार्ग पर, जो साध्य के ही समान उदात्त है, महान् है। चले-चलो वीर! साथ में संबल है— हमारी श्रद्धा, हमारी निष्ठा, हमारा धैर्य और हमारा उत्स।

**४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ.प्र.)*

ख़बरनामा

बरतानिया संसद की तरफ से जनगणना 2021 के लिए पास खरड़े में सिक्खों के लिए अलग कालम न रखना निंदनीय : भाई लौंगोवाल

श्री अमृतसर : ८ मई : बरतानिया की संसद की तरफ से जनगणना २०२१ के लिए तैयार किये खरड़े में सिक्ख कौम के लिए अलग कालम न रखने को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने दुर्भाग्यपूर्ण कहा है। वर्णनीय है कि गत दो दशकों से सिक्खों की अलग गणना को लेकर संघर्ष कर रहे सिक्खों की माँग को संसद की तरफ से नजरअन्दाज कर दिया गया है। जनगणना २०२१ के लिए स्वीकार किये गए खरड़े में सिक्खों को फिर अलग कौम के तौर पर नहीं माना गया। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार सिक्खों का अलग कालम नहीं है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इसे सिक्खों के साथ धक्का करार दिया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने कहा कि पूरी दुनिया में सिक्खों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। बरतानिया में भी सिक्ख दशकों से देश के विकास के लिए योगदान दे रहे हैं। फ़ौज और पेशेवर धंधों में सिक्खों की अहम भूमिका रही है। विश्व युद्ध में भी सिक्खों की अनेक कुर्बानियां हैं। सिक्ख धर्म को ख़ास तौर पर नजरअन्दाज करना दुर्भाग्यपूर्ण है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि यह सिक्खों के योगदान को नकारने वाली बात है, जिससे बरतानिया के सिक्ख भाईचारे में आक्रोश पाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बरतानिया के सिक्ख नेताओं— स. तनमनजीत सिंघ (ढेसी) और बीबी प्रीत कौर (गिल्ल) ने इस मामले को संसद में उठाया परंतु फिर भी सिक्खों को नजरअन्दाज कर दिया गया। भाई लौंगोवाल ने कहा कि बरतानिया सरकार को इस बारे में अवश्य सोचना चाहिए, क्योंकि हर धर्म की देश में स्थिति के बारे में स्पष्ट होने के लिए जनगणना में अलग कालम होने जरूरी है।

उत्तर प्रदेश के मगहर में तालाबंदी के कारण फंसे ट्रक चालकों के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने किया लंगर का प्रबंध

श्री अमृतसर : ९ मई : कोरोना महामारी के दौरान कफ़्र्यू के कारण फंसे ट्रक चालकों के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी आगे आई है। उत्तर प्रदेश भक्त कबीर जी से सम्बन्धित गुरुद्वारा साहिब मगहर निकट गोरखपुर में ठहरे ट्रक चालकों के लिए, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी के अधीन कार्यशील सिक्ख मिशन हापुड़ के तरफ से मदद की पहलकदमी की गई है। यहां चालकों और संगत के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा

लंगर सेवाएं जारी हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल के निर्देशानुसार उत्तर प्रदेश में स्थित सिक्ख मिशन की तरफ से सेवादारों की ड्यूटी लगाई गई है, जो लंगर के लिए कार्यशील हैं। धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. मनजीत सिंघ बाठ ने बताया कि मगहर में गुरुद्वारा साहिब की प्रबंधक बीबी परमजीत कौर के सहयोग से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा लंगर और अन्य ज़रूरी सेवाएं दी जा रही हैं। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश सिक्ख मिशन के इंचार्ज भाई ब्रिज़पाल सिंघ की देख-रेख में सेवादार ड्यूटी निभा रहे हैं। लंगर बांटते समय आपसी दूरी का भी ख़ास ख़्याल रखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा उत्तर प्रदेश सिक्ख मिशन हापुड़ के कर्मचारियों को प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग के निर्देशों का पालन करते हुए सेवाएं निभाने के लिए कहा गया है।

भाई लौंगोवाल की सुपत्नी बीबी अमरपाल कौर के निमित्त शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी मुख्यालय में श्रद्धाँजलि समारोह

श्री अमृतसर : १२ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल की सुपत्नी बीबी अमरपाल कौर के निमित्त शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों और अधिकारियों द्वारा शोक सभा आयोजित कर बिछड़ी रूह को श्रद्धाँजलि भेंट की गई। कोरोना वायरस के चलते बीबी अमरपाल कौर के भोग और अंतिम अरदास में शामिल न हो सकने के कारण सदस्यों और अधिकारियों द्वारा श्रद्धाँजलि समारोह के दौरान मूल-मंत्र और गुरु-मंत्र के जाप के बाद अरदास की गई। इस समारोह में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाई रजिंदर सिंघ महिता, सदस्य भाई मनजीत सिंघ, बाबा कशमीर सिंघ भूरीवाले, मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंघ और अपर सचिव स. सुखदेव सिंघ भूराकोहना ने बीबी अमरपाल कौर को अपने शब्दों के माध्यम से श्रद्धा-सुमन भेंट किये। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्यकारिणी सदस्य स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, सदस्य भाई राम सिंघ, भाई अजाइब सिंघ अभ्यासी, स. भगवंत सिंघ सिआलका, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड, स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, स. बावा सिंघ गुमानपुरा, सचिव स. मनजीत सिंघ बाठ आदि उस्थित थे।

इसी दौरान तख़्त श्री हजूर साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब बाबा कुलवंत सिंघ के भ्राता स. धनवंत सिंघ कड़ेवाले के अकाल प्रस्थान पर भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा शोक प्रकट किया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंघ ने कहा कि स. धनवंत सिंघ के अकाल प्रस्थान कर जाने से पंथ की प्रसिद्ध शख्सियत बाबा कुलवंत सिंघ के परिवार को बड़ा आघात पहुंचा है। उन्होंने बिछड़ी रूह की आत्मिक शान्ति के लिए अरदास भी की।